सोमवार
10 अगस्त 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 198
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

ट्रैक्टर की चपेट में आकर छात्रा की मौत

हमारे संवाददाता

देहरादून। सड़क दुर्घटना में देर रात एक ट्रैक्टर की चपेट में आकर एक छात्रा की मौत हो गयी। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार बीती रात एक सड़क हादसे में बीटेक प्रथम वर्ष की 18 वर्षीय छात्रा की मौत हो गई। क्लेमेंटटाउन थाना क्षेत्र के चार खंबा चौक के पास पैदल जा रही छात्रा को पीछे से आए मिक्सर ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि छात्रा ट्रैक्टर के नीचे आ गई और गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही क्लेमेंटटाउन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायल छात्रा को तत्काल एंबुलेंस की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया। हालांकि, डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मिक्सर ट्रैक्टर और उसके चालक को हिरासत में लेकर हादसे की जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार बीती रात करीब 8:45 बजे चार खंबा चौक के पास सड़क हादसे की सूचना मिली थी। बताया गया कि एक युवती मिक्सर ट्रैक्टर की चपेट में आने के बाद उसके नीचे आ गई है। सूचना मिलते ही थाना क्लेमेंटटाउन की पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायल युवती को बाहर निकाला और एंबुलेंस के जरिए वेलमेड अस्पताल पहुंचाया। अस्पताल में डॉक्टरों ने युवती को मृत घोषित कर दिया। हादसे में जान गंवाने वाली छात्रा की पहचान वैष्णवी रावत ,उम्र 18 वर्ष के रूप में हुई है। वह मूल रूप से दिल्ली की रहने वाली थी।

वैष्णवी देहरादून स्थित ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी में बीटेक प्रथम वर्ष की छात्रा थी। पढ़ाई के लिए वह देहरादून में रह रही थी। पुलिस के अनुसार, हादसे के समय वैष्णवी अपनी बड़ी बहन कृतिका रावत के साथ थी। दोनों बहनें चार खंबा चौक से पैदल अपने कमरे की ओर जा रही थीं। इसी दौरान पीछे से तेज गति से आए मिक्सर ट्रैक्टर ने वैष्णवी को टक्कर मार दी।

टक्कर लगने के बाद वह सड़क पर गिर गई और ट्रैक्टर के नीचे आ गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और आसपास मौजूद लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने हादसे में शामिल मिक्सर ट्रैक्टर को कब्जे में लेने के साथ ही चालक को हिरासत में लिया है। साथ ही मृतका के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। परिजनों की तहरीर मिलने के बाद मामले में नियमानुसार वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

एमडीडीए के सहायक अभियंता की सड़क हादसे में मौत

हमारे संवाददाता

देहरादून। मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) के सहायक अभियंता राजेंद्र बहुगुणा की सड़क दुर्घटना में दर्दनाक मौत हो गई। प्रार्रंभिक जानकारी के अनुसार कांवड़ियों के वाहन से टक्कर के बाद यह हादसा हुआ। दुर्घटना की सूचना मिलते ही परिवार और एमडीडीए में शोक की लहर दौड़ गई।

राजेंद्र बहुगुणा देहरादून के शास्त्रीनगर क्षेत्र के निवासी बताए जा रहे हैं। सड़क हादसे में उनकी मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं, एमडीडीए के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी घटना पर गहरा दुख जताया है।

प्रार्रंभिक जानकारी के अनुसार राजेंद्र बहुगुणा सड़क से गुजर रहे थे, इसी दौरान कांवड़ियों के वाहन से उनकी टक्कर हो गई। हादसा इतना गंभीर था कि वह बुरी तरह घायल हो गए। उन्हें उपचार के लिए ले जाया गया, लेकिन उनकी जान नहीं बचाई जा सकी। हालांकि हादसे के सटीक स्थान, समय और दुर्घटना की पूरी परिस्थितियों की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जानकारी जुटानी शुरू कर दी है। दुर्घटना में शामिल वाहन और हादसे के कारणों को लेकर भी जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस की जांच और आधिकारिक जानकारी सामने आने के बाद दुर्घटना की पूरी तस्वीर स्पष्ट होगी।

धर्मनगरी में दूसरे सोमवार को डाक शिव भक्तों का उमड़ा जन सैलाब

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। धर्म नगरी हरिद्वार में सावन के दूसरे सोमवार के आखिरी दिन में डाक कांवड़ भक्तों की भीड़ अपने चरम पर है। महाशिवरात्रि पर्व पर सभी शिव भक्त अपना-अपने स्थानों पर भगवान भोले शंकर का जलाभिषेक करेंगे। अब तक लगभग 4 करोड़ शिव भक्त गंगाजल लेकर अपने-अपने राज्यों के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। यात्रा के अंतिम पड़ाव में हरिद्वार में शिवभक्तों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

बता दें कि देश के कोने-कोने से श्रद्धालु गंगाजल लेने के लिए धर्मनगरी हरिद्वार पहुंच रहे हैं। उत्तराखंड सरकार की ओर से कांवड़ यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और सुचारु यात्रा के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। प्रशासन ने यात्रा मार्गों पर सुरक्षा व्यवस्था, साफ-सफाई, पेयजल, स्वास्थ्य सुविधाओं सहित अन्य व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे। कावड़ यात्रा के दौरान अपना कांवड़ यात्रा का अनुभव साझा करते हुए शिव भक्तों ने कहा कि वह हर साल गंगा जल लेने हरिद्वार आते है। इस वर्ष उत्तराखण्ड सरकार ने सभी व्यवस्थाएं अच्छी कर रखी है। इस बार कावड़ यात्रा में उत्तराखंड सरकार तथा हरिद्वार प्रशासन द्वारा कांवड़ियों के लिए बेहतर व्यवस्थाएं की गई है, जिससे सभी कांवड़ियों की यात्रा को सुखमय बनाया गया है। उत्तर प्रदेश अमरोहा से सुनील कुमार ने कहा कि वह 10-15 साल से निरन्तर कांवड़ लेने हरिद्वार आ रहे हैं। इस साल जिला प्रशासन एवं उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने जगह-जगह मेडिकल कैंप, पानी, शौचालय, लाइट खाने की सभी व्यवस्थाएं अच्छी तरह से की गई है इसके लिए वह जिला प्रशासन एवं उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री का दिल से आभार व्यक्त करते है। कांवड़ियों के लिए उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री द्वारा सभी व्यवस्थाएं ठीक ढंग से की गई है जिसके लिए उन्होंने मुख्यमंत्री का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करते है। कांवड़ यात्रियों ने कहा कि इस बार यात्रा मार्गों पर सफाई व्यवस्था, सुरक्षा इंतजाम और पानी की सुविधा पहले से काफी बेहतर दिखाई दे रही है। शिवमय हुई धर्मनगरी हरिद्वार में श्रद्धालुओं ने जिला प्रशासन व पुलिस की ओर से की गई व्यवस्थाओं के लिए आभार व्यक्त किया। श्रद्धालुओं ने कहा कि बेहतर प्रबंधन और सेवाभाव के कारण कांवड़ यात्रा शिव भक्तों के लिए सुगम और सुरक्षित हो पाई है।

दून वैली मेल

संपादकीय

दर्द, डेटा और दौलत

राजनीति में कुछ शब्द भाषण खत्म होने के साथ खत्म हो जाते हैं और कुछ शब्द भाषण के बाद सवाल बनकर रह जाते हैं। प्रयागराज में राहुल गांधी ने युवाओं के संदर्भ में दर्द, डेटा और दौलत की जो त्रयी रखी, वह इसी दूसरी श्रेणी की है। तीन शब्द हैं, लेकिन इनके भीतर आज के युवा भारत की एक लंबी कहानी छिपी है। दर्द उस युवा का है जो पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश में वर्षों निकाल देता है। डेटा उस व्यवस्था का सवाल है जो बेरोजगारी, भर्ती, परीक्षा और रोजगार के वास्तविक आंकड़ों को सामने रखने से बचती हुई दिखाई देती है और दौलत उस आर्थिक ढांचे का सवाल है, जिसमें अवसर और संपत्ति का वितरण लगातार बहस का विषय बना हुआ है। राहुल गांधी ने इन तीन शब्दों को एक राजनीतिक सूत्र की तरह पेश किया है। अब इस सूत्र की असली परीक्षा यह है कि क्या विपक्ष इसे केवल भाषण का नारा बनाएगा या युवाओं की जिंदगी बदलने का कार्यक्रम भी तैयार करेगा। युवा बेरोजगार है यह बात अब किसी राजनीतिक दल के लिए नई नहीं है। हर चुनाव में रोजगार सबसे बड़े मुद्दों में शामिल रहता है। लेकिन रोजगार का सवाल सिर्फ नौकरी मिलने या न मिलने का सवाल नहीं है। एक युवा की समस्या तब शुरू होती है जब वह वर्षों तक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करता है। फिर परीक्षा होती है तो पेपर लीक की खबर आती है। भर्ती प्रक्रिया शुरू होती है तो पदों की संख्या कम पड़ जाती है। परिणाम आता है तो विवाद खड़ा हो जाता है। अदालत जाती है तो साल निकल जाते हैं। युवा की उम्र बढ़ती जाती है और उसकी उम्मीद छोटी होती जाती है। यही दर्द है। यह दर्द केवल आर्थिक नहीं है। इसमें समय का नुकसान है, परिवार की उम्मीदों का दबाव है और उस आत्मविश्वास का टूटना है जो एक युवा को यह विश्वास दिलाता है कि मेहनत करने से उसका भविष्य बेहतर हो सकता है। इसलिए रोजगार पर राजनीति करते समय आंकड़ों से ज्यादा जरूरी है उस युवा की जिंदगी को समझना। लोकतंत्र में आंकड़े सिर्फ संख्या नहीं होते। वे सरकार के कामकाज का आईना होते हैं। कितनी नौकरियां निकलीं?कितनी भर्तियां पूरी हुईं?कितने पद खाली हैं?कितनी परीक्षाएं रद्द हुईं?कितने युवाओं ने परीक्षा दी?कितनों को रोजगार मिला?कितने शिक्षित युवा बेरोजगार हैं? इन सवालों के जवाब सार्वजनिक और विश्वसनीय होने चाहिए। क्योंकि आंकड़ा छिपता है तो बहस अनुमान में बदल जाती है और अनुमान राजनीति का हथियार बन जाता है। युवाओं को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि रोजगार बढ़ रहा है या अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है। उन्हें यह जानने का अधिकार है कि उस विकास में उनके लिए कितनी जगह बनी है। युवा पूछ रहा हैकृजीडीपी बढ़ी तो मेरी नौकरी कहां बढ़ी? यह सवाल असहज जरूर है, लेकिन लोकतंत्र में असहज सवाल ही सबसे जरूरी सवाल होते हैं। तीसरा शब्द सबसे ज्यादा राजनीतिक है दौलत। देश में संपत्ति पैदा हो रही है। नए उद्योग खड़े हो रहे हैं। कंपनियां बढ़ रही हैं। बाजार फैल रहा है। लेकिन सवाल यह है कि इस आर्थिक विकास का लाभ समाज के कितने हिस्से तक पहुंच रहा है? अगर आर्थिक विकास का बड़ा हिस्सा कुछ लोगों और कुछ क्षेत्रों तक सीमित रह जाए और दूसरी तरफ बड़ी संख्या में युवा स्थायी रोजगार के लिए संघर्ष करते रहें तो विकास का अर्थ अधूरा रह जाता है। दौलत का सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि रोजगार और संपत्ति एक-दूसरे से जुड़े हैं, जिस अर्थव्यवस्था में छोटे कारोबार कमजोर होंगे, स्थानीय उद्योग बंद होंगे, कृषि की आय पर दबाव होगा और रोजगार का बड़ा हिस्सा अस्थायी होगा, वहां केवल आर्थिक विकास के बड़े आंकड़े युवा की बेचौनी को शांत नहीं कर सकते। युवा को सिर्फ नौकरी नहीं चाहिए। उसे अवसर चाहिए। यहां दर्द सिर्फ बेरोजगारी का नहीं है। यह अपने घर से दूर जाने का दर्द भी है। अगर पहाड़ में शिक्षा है लेकिन उसके बाद रोजगार नहीं है, अगर युवा डिग्री लेकर शहर की ओर जाने को मजबूर है, तो विकास की कहानी में एक अध्याय अभी भी अधूरा है। राहुल गांधी ने तीन शब्द कह दिए। अब गेंद विपक्ष के पाले में है। अगर दर्द को राजनीति का मुद्दा बनाया गया है तो उसका समाधान क्या है? अगर डेटा की बात है तो क्या कांग्रेस और विपक्षी दल राज्यों में भर्ती, रोजगार और बेरोजगारी का अपना पारदर्शी डेटा सार्वजनिक करेंगे? अगर दौलत का सवाल उठाया गया है तो क्या वे बताएंगे कि छोटे उद्योग, स्टार्टअप, कृषि, पर्यटन और स्थानीय रोजगार को मजबूत करने की उनकी ठोस आर्थिक नीति क्या होगी? युवा अब केवल भाषण नहीं सुनना चाहता। वह पूछता है मेरे लिए योजना क्या है? यही वह जगह है जहां राजनीतिक नारे और राजनीतिक कार्यक्रम के बीच फर्क दिखाई देता है। भारतीय राजनीति ने लंबे समय तक युवाओं को एक बड़े वोट बैंक के रूप में देखा है। चुनाव आते हैं तो युवा सम्मेलन होते हैं, रोजगार के वादे होते हैं, नई योजनाओं की घोषणाएं होती हैं। लेकिन युवा केवल वोटर नहीं है। वह देश की सबसे बड़ी कार्यशील शक्ति बनने जा रहा है। अगर उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल, रोजगार और उद्यम का अवसर मिलता है तो वही जनसंख्या आर्थिक ताकत बन सकती है। अगर अवसर नहीं मिलता तो वही जनसंख्या असंतोष का स्रोत भी बन सकती है। इसलिए दर्द, डेटा, दौलत को केवल राहुल गांधी का राजनीतिक नारा समझना गलती होगी। यह तीन शब्द सत्ता और विपक्ष दोनों के लिए सवाल हैं। दर्द पूछता है युवा परेशान क्यों है? डेटा पूछता है सच्चाई कितनी है? दौलत पूछती है विकास का फायदा किसके पास गया? और लोकतंत्र का सबसे बड़ा सवाल इन तीनों को जोड़कर बनता है अगर इसका जवाब हां है तो सरकार को आंकड़ों के साथ सामने आना चाहिए। अगर जवाब नहीं है तो विपक्ष को सिर्फ आलोचना नहीं, विकल्प देना चाहिए। क्योंकि देश का युवा अब भाषणों की तालियों से आगे निकल चुका है। उसे भर्ती की तारीख चाहिए, परीक्षा की विश्वसनीयता चाहिए, रोजगार का अवसर चाहिए और अपनी मेहनत के बदले सम्मानजनक भविष्य चाहिए। दर्द को पहचानना राजनीति की शुरुआत है। डेटा को सामने रखना लोकतंत्र की जिम्मेदारी है। लेकिन उस दर्द को अवसर और दौलत में बदल देना यही असली शासन की परीक्षा है।

भाजपा ने तैयार की चुनावी 'फौज'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव 2027 की राजनीतिक जमीन अभी से तैयार होने लगी है। सत्ता में हैट्रिक लगाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही भाजपा ने संगठन को चुनावी मोड में लाने की दिशा में एक और बड़ा कदम उठाया है। पार्टी ने प्रदेश कार्यसमिति का गठन कर नेताओं की एक ऐसी टीम तैयार की है, जिसमें संगठन के अनुभवी चेहरों से लेकर अलग-अलग क्षेत्रों में प्रभाव रखने वाले नेताओं को जिम्मेदारियां दी गई हैं। प्रदेश कार्यसमिति की घोषणा को महज संगठनात्मक फेरबदल के तौर पर नहीं देखा जा रहा। इसके पीछे 2027 के विधानसभा चुनाव की बड़ी रणनीति दिखाई दे रही है। भाजपा का लक्ष्य साफ हैकृसंगठन को मजबूत करो, बूथ को मजबूत करो और चुनाव से पहले हर विधानसभा क्षेत्र में पार्टी की पूरी मशीनरी को सक्रिय कर दो।

◆भाजपा प्रदेश कार्यसमिति में दिग्गजों को जिम्मेदारी
◆अनुभवी नेताओं के साथ नए चेहरों को मिली जगह
◆बूथ से विधानसभा तक चुनावी नेटवर्क करेंगे मजबूत

भाजपा की नई प्रदेश कार्यसमिति में कई वरिष्ठ और अनुभवी नेताओं को जगह मिली है। पार्टी के लिए इन नेताओं का अनुभव चुनावी परिस्थितियों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वहीं संगठन में नई ऊर्जा लाने के लिए नए चेहरों को भी जिम्मेदारी देकर भाजपा ने यह संकेत दिया है कि आगामी चुनाव केवल सरकार के भरोसे नहीं, बल्कि संगठन की ताकत के दम पर लड़ा जाएगा। पार्टी की राजनीति में संगठन को हमेशा सबसे महत्वपूर्ण हथियार माना जाता है। यही वजह है कि भाजपा चुनाव से काफी पहले अपनी टीम को मैदान में उतारने की तैयारी कर रही है। प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य आने वाले समय में केवल बैठकों तक सीमित नहीं रहेंगे। उन्हें विधानसभा क्षेत्रों में संगठन की स्थिति, बूथ स्तर की तैयारियों, कार्यकर्ताओं की सक्रियता और स्थानीय राजनीतिक समीकरणों पर भी नजर रखनी होगी।

भाजपा की इस पूरी कवायद में उन विधानसभा सीटों पर विशेष फोकस माना जा रहा है, जहां पार्टी को पिछले चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था। पार्टी पहले ही कमजोर सीटों की पहचान कर चुकी है और वरिष्ठ नेताओं को विधानसभा स्तर पर संगठनात्मक प्रवास की जिम्मेदारी देने की रणनीति पर काम कर रही है। अब प्रदेश कार्यसमिति की नई टीम इस अभियान को और गति दे सकती है। भाजपा की रणनीति है कि चुनाव की घोषणा का इंतजार करने के बजाय अभी से कमजोर बूथों और कमजोर विधानसभा क्षेत्रों में संगठन को सक्रिय किया जाए। यानी इस बार भाजपा का चुनावी मंत्र केवल चुनाव के समय प्रचार नहीं, बल्कि चुनाव से पहले संगठन तैयार करने का है।

भाजपा के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सरकार के कामकाज को चुनावी मुद्दा बनाना भी महत्वपूर्ण होगा। सरकार की उपलब्धियों को लेकर पार्टी पहले से ही जनता के बीच जाने की तैयारी कर रही है। प्रदेश कार्यसमिति के जरिए पार्टी सरकार की योजनाओं और उपलब्धियों को बूथ स्तर तक पहुंचाने की कोशिश करेगी। इसके लिए कार्यकर्ताओं को यह बताया जाएगा कि सरकार ने क्या काम किया, उसका लाभ किन वर्गों को मिला और आने वाले समय में पार्टी का एजेंडा क्या होगा। भाजपा की कोशिश होगी कि सरकार और संगठन के बीच बेहतर तालमेल बने और उसका फायदा चुनाव में मिले। प्रदेश कार्यसमिति का गठन पार्टी के भीतर टिकट की राजनीति के लिहाज से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। चुनाव में अभी समय है, लेकिन संभावित प्रत्याशियों की सक्रियता पहले ही बढ़ चुकी है।

भाजपा नेतृत्व लगातार यह संकेत देता रहा है कि टिकट केवल व्यक्तिगत संपर्क या सिफारिश से नहीं, बल्कि संगठन में प्रदर्शन, जनता के बीच पकड़ और चुनाव जीतने की क्षमता के आधार पर तय होगा। ऐसे में नई कार्यसमिति में शामिल नेताओं की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। उन्हें संगठन के साथ-साथ स्थानीय राजनीतिक समीकरणों की रिपोर्ट भी ऊपर तक पहुंचानी होगी। यानी प्रदेश कार्यसमिति सिर्फ पदों की सूची नहीं, बल्कि आने वाले चुनाव के लिए राजनीतिक फीडबैक सिस्टम भी

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

कांग्रेस का बड़ा प्लान, यशपाल आर्य को कमान!

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सियासत में 2027 के विधानसभा चुनाव की आहट अब तेज होती जा रही है। भाजपा जहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की रणनीति पर काम कर रही है, वहीं कांग्रेस अब ऐसा चेहरा तलाश रही है जो भाजपा के चुनावी नैरेटिव को सीधे चुनौती दे सके। पार्टी के भीतर से निकल रही चर्चाओं और सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस वरिष्ठ नेता यशपाल आर्य को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाकर चुनाव मैदान में उतरने की रणनीति पर गंभीरता से विचार कर रही है। अगर यह रणनीति अंतिम रूप लेती है तो उत्तराखंड की राजनीति में बड़ा बदलाव माना जाएगा। कांग्रेस पहली बार चुनाव से पहले मुख्यमंत्री चेहरे को स्पष्ट कर भाजपा के सामने सीधी राजनीतिक लड़ाई खड़ी कर सकती है। हालांकि पार्टी की ओर से अभी तक इसकी आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है और अंतिम फैसला कांग्रेस हाईकमान को करना है।

◆यशपाल आर्य को सीएम फेस बनाकर चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी
◆सत्ता की लड़ाई में कांग्रेस का नया कार्ड, हाईकमान की मुहर का इंतजार
◆कांग्रेस की तराई से पहाड़ तक सामाजिक समीकरण साधने की कोशिश

कांग्रेस की रणनीति का सबसे बड़ा हिस्सा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के सामने एक ऐसा चेहरा खड़ा करना है, जिसके पास लंबा राजनीतिक अनुभव हो और जो प्रदेश के अलग-अलग सामाजिक समीकरणों में स्वीकार्यता रखता हो। यशपाल आर्य उत्तराखंड की राजनीति में लंबे समय से सक्रिय हैं। वह कांग्रेस और भाजपा दोनों दलों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं और प्रदेश सरकार में मंत्री भी रहे हैं। इसके अलावा उनकी राजनीतिक पकड़ कुमाऊं के साथ-साथ तराई क्षेत्र में भी मानी जाती है। कांग्रेस के रणनीतिकारों को लगता है कि आर्य को मुख्यमंत्री चेहरे के तौर पर पेश करने से चुनाव का विमर्श केवल धामी बनाम कौन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व, क्षेत्रीय संतुलन और सरकार के प्रदर्शन जैसे मुद्दे भी केंद्र में आ सकते हैं।

आर्य को आगे करने की चर्चा के पीछे सामाजिक समीकरण भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उत्तराखंड में दलित मतदाता चुनावी गणित में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। कांग्रेस अगर आर्य को मुख्यमंत्री चेहरे के तौर पर आगे करती है तो पार्टी इसे सामाजिक प्रतिनिधित्व के बड़े संदेश के रूप में पेश कर सकती है। कांग्रेस के सामने चुनौती यह है कि भाजपा पिछले दो विधानसभा चुनावों से लगातार मजबूत स्थिति में है। ऐसे में केवल सरकार विरोधी माहौल के भरोसे सत्ता में वापसी मुश्किल हो सकती है। पार्टी को ऐसा नैरेटिव तैयार करना होगा जो मतदाताओं को यह भरोसा दिला सके कि उसके पास सरकार चलाने का स्पष्ट नेतृत्व और रोडमैप दोनों मौजूद हैं। यहीं पर आर्य का नाम कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

आर्य को मुख्यमंत्री चेहरा घोषित करना कांग्रेस के लिए जितना बड़ा राजनीतिक दांव होगा, उतनी ही बड़ी चुनौती पार्टी के भीतर पैदा हो सकती है। उत्तराखंड कांग्रेस में मुख्यमंत्री पद के कई दावेदार माने जाते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, विधायक और संगठन के कई प्रभावशाली चेहरे लंबे समय से प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हैं। ऐसे में किसी एक चेहरे को चुनाव से पहले मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित करने के बाद बाकी नेताओं को साथ लेकर चलना कांग्रेस नेतृत्व के लिए सबसे बड़ी परीक्षा होगी। कांग्रेस अगर आर्य के नाम पर आगे बढ़ती है तो उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि पार्टी का चुनावी अभियान किसी एक नेता की महत्वाकांक्षा के बजाय सामूहिक नेतृत्व के संदेश के साथ आगे बढ़े।

भाजपा की रणनीति फिलहाल मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व और सरकार की उपलब्धियों को केंद्र में रखकर आगे बढ़ने की है। पार्टी संगठन बूथ स्तर तक अपनी तैयारियां तेज कर चुका है।

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

एक माह में 6,825 लोगों ने उठाया निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ

अल्मोड़ा (आरएनएस)। शासन के निर्देशानुसार सुशासन एवं समर्पण कार्यक्रम% के तहत 4 जुलाई से 5 अगस्त तक जनपद में आयोजित निशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का सफलतापूर्वक समापन हो गया। एक माह तक चले इस अभियान के दौरान जिले के सुदूर क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाते हुए 6,825 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और उन्हें निशुल्क उपचार एवं दवाइयों का लाभ दिया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित शिविरों में सामान्य चिकित्सा के साथ स्त्री रोग, बाल रोग, दंत रोग, नेत्र रोग और अस्थि रोग विशेषज्ञों ने मरीजों की जांच की। इसके अलावा आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श और निशुल्क दवाइयों का वितरण भी किया गया। अभियान के दौरान 559 महिलाओं की सर्वाइकल एवं स्तन कैंसर की जांच, 1,००2 लोगों की मुख कैंसर जांच, 1,877 लोगों की टीबी जांच, 1,789 लोगों की स्वास्थ्य परामर्श सेवाएं, 1,512 लोगों के एक्स-रे, 2,191 लोगों की मधुमेह तथा 2,239 लोगों की उच्च रक्तचाप की जांच की गई। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. दीपक शर्मा ने बताया कि स्वास्थ्य जांच के साथ लोगों को मौसमी बीमारियों से बचाव, स्वच्छता, संतुलित पोषण और आयुष्मान भारत सहित केंद्र एवं राज्य सरकार की विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं के प्रति भी जागरूक किया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एच.सी. पंत ने शिविरों के सफल संचालन के लिए सभी चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

विकास भवन के शौचालयों का सीडीओ ने किया औचक निरीक्षण

हरिद्वार(आरएनएस)। मुख्य विकास अधिकारी डॉ. ललित नारायण मिश्र ने विकास भवन स्थित शौचालयों का औचक निरीक्षण कर साफ-सफाई और स्वच्छता व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने शौचालयों की नियमित सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था और अन्य मूलभूत सुविधाओं का निरीक्षण किया तथा संबंधित अधिकारियों को व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। सीडीओ ने कहा कि विकास भवन में प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग अपने कार्यों के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में परिसर में स्वच्छ और बेहतर वातावरण बनाए रखना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने निर्देश दिए कि शौचालयों की नियमित सफाई सुनिश्चित की जाए और कहीं भी गंदगी, दुर्गंध या अव्यवस्था की स्थिति न बनने पाए। उन्होंने अधिकारियों को माननीय उच्च न्यायालय की स्वच्छता संबंधी गाइडलाइन का पूरी तरह पालन कराने के निर्देश दिए। साथ ही कहा कि शौचालयों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और तय समय पर सफाई कराई जाए, ताकि आमजन और कर्मचारियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। डॉ. मिश्र ने साफ कहा कि स्वच्छता व्यवस्था में किसी भी स्तर पर लापरवाही या शिथिलता क्षम्य नहीं होगी। निरीक्षण के दौरान यदि कहीं भी साफ-सफाई में कमी पाई गई तो संबंधित कर्मचारियों और अधिकारियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

नीलकंठ मार्ग पर 17,971 श्रद्धालुओं का उपचार हुआ

ऋषिकेश(आरएनएस)। कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। प्रशासन ने विभिन्न स्थानों पर अस्थायी स्वास्थ्य शिविर और मोबाइल मेडिकल टीमें तैनात की हैं ताकि किसी भी आपात स्थिति में तुरंत उपचार मिल सके। अभी तक 17,971 श्रद्धालुओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जिनमें सामान्य जांच, प्राथमिक उपचार और गंभीर मामलों में अस्पताल रेफर करना शामिल है। स्वास्थ्य विभाग ने यात्रा मार्गों पर एम्बुलेंस सेवाएं भी सक्रिय रखी हैं और डॉक्टरों के साथ-साथ पैरामेडिकल स्टाफ को चौबीसों घंटे ड्यूटी पर लगाया गया है। प्रशासन का कहना है कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा और स्वास्थ्य सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस तरह की व्यवस्थाओं से श्रद्धालुओं को न केवल राहत मिल रही है बल्कि यात्रा के दौरान उनका विश्वास भी बढ़ रहा है।

छात्र-छात्राओं को नशा मुक्त समाज बनाने की शपथ दिलाई

विकासनगर(आरएनएस)। अंबाड़ी स्थित प्रगति शिक्षा मंदिर जूनियर हाई स्कूल में यातायात नियमों, नशा मुक्ति तथा बच्चों के कानूनी अधिकारों को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को नशा मुक्त समाज बनाने की शपथ दिलाई गई। दरोगा रूबी मौर्य ने विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने की अपील करते हुए कहा कि सड़क पर थोड़ी सी सावधानी कई अनमोल जीवन बचा सकती है। उन्होंने दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करने तथा यातायात नियमों का पालन करने का संदेश दिया। कहा कि नशा केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि उसके परिवार, समाज और भविष्य को भी प्रभावित करता है।उन्होंने विद्यार्थियों और शिक्षकों को नशा मुक्ति की शपथ दिलाई तथा सभी से अपने परिवार और आसपास के लोगों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। उन्होंने बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों, सुरक्षा संबंधी प्रावधानों तथा किसी भी आपात या विपरीत परिस्थिति में पुलिस से सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी दी। विद्यार्थियों से निर्भीक होकर अपनी समस्याएं साझा करने और आवश्यकता पड़ने पर पुलिस प्रशासन से संपर्क करने की अपील की। मौके पर विद्यालय की प्रधानाचार्य सोनम माथुर, सुनीता देवी, सुमित्रा तोमर, नवीन जोशी, प्रीति नेगी, निशा सिंह, रानी चंदेल, सपना वर्मा, सुमन रानी, अंकिता तोमर, मनीषा खन्ना, मंजू देवी, मनीषा वर्मा आदि मौजूद रहे।

पहाड़ की बेटी के गले का 'गलोबंद'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पहाड़ की महिलाओं के गले में सजा गलोबंद कभी परिवार की पहचान हुआ करता था। सोने-चांदी के छोटे-छोटे टुकड़ों में बुनी यह परंपरा आज फैशन की दुनिया में भले लौट रही हो, लेकिन इसके पीछे छिपी पहाड़ की स्मृतियां धीरे-धीरे धुंधली पड़ रही हैं। पहाड़ की सुबह जितनी सादगी भरी होती है, वहां की स्त्री का श्रृंगार उतना ही अर्थपूर्ण। माथे की बिंदी, नाक की नथ, कानों के झुमके और गले में सजा गलोबंद यह सिर्फ आभूषण नहीं थे। इनमें पहाड़ की अर्थव्यवस्था, परिवार की हैसियत, कारीगर की मेहनत और महिलाओं की पीढ़ियों पुरानी स्मृतियां दर्ज होती थीं। गलोबंद को देखिए तो पहली नजर में यह गले में पहना जाने वाला एक पारंपरिक आभूषण लगता है। लेकिन पहाड़ के गांवों में इसकी कहानी इससे कहीं बड़ी रही है।

कभी बेटी की शादी में मायके से आने वाले गहनों में गलोबंद का खास स्थान होता था। मां का गलोबंद बेटी तक पहुंचता था और उसके साथ सिर्फ सोना या चांदी नहीं जाती थीकृजाती थी एक पूरी पीढ़ी की कहानी। दादी ने पहना, मां ने संभाला और बेटी ने विरासत में पाया। यही तो पहाड़ के गहनों की खासियत थी। आज जब बाजार में आभूषण डिजाइन बदल रहे हैं और पारंपरिक गहने आधुनिक फैशन के साथ दोबारा दिखाई देने लगे हैं, तब गलोबंद भी नई पीढ़ी के बीच अपनी जगह बना रहा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या गलोबंद सिर्फ फैशन बनकर रह जाएगा या इसके पीछे की संस्कृति भी बच पाएगी?

परंपरागत गलोबंद के निर्माण में कारीगरी का अपना महत्व रहा है। अलग-अलग क्षेत्रों और परिवारों में इसके डिजाइन, आकार और इस्तेमाल की शैली में अंतर देखने को मिलता है। इसमें धातु के छोटे-छोटे हिस्सों को जोड़कर या कपड़े/धागे के आधार पर सजाकर गले का आभूषण तैयार किया जाता था। इसकी खूबसूरती केवल चमक में नहीं थी। उसकी असली खूबसूरती उस हाथ में थी, जिसने उसे बनाया था। पहाड़ में आभूषण बनाने वाले कारीगरों की अपनी दुनिया थी। पीढ़ियों से चली आ रही यह कला उनके हुनर और धैर्य की परीक्षा लेती थी। एक-एक डिजाइन के पीछे घंटों की मेहनत होती थी।

◆यह गहना नहीं, मां की संदूकची से निकली हुई है एक पूरी पीढ़ी
◆गले का गलोबंद सिर्फ गहना नहीं, पहाड़ के पीढ़ियों की कहानी
◆मायके की सोंधी महक, पीढ़ियों का दुलार और धुंधलाती यादें

आज मशीन से बने आभूषण बाजार में जल्दी उपलब्ध हो जाते हैं। कीमत भी कई बार कम होती है। ऐसे में हाथ से तैयार पारंपरिक गहनों के सामने बाजार की चुनौती बढ़ी है। लेकिन गलोबंद की मांग पूरी तरह खत्म नहीं हुई। बल्कि नई पीढ़ी ने इसे नए अंदाज में अपनाना शुरू किया है। पहाड़ की पारंपरिक पोशाक के साथ पहना जाने वाला गलोबंद अब सिर्फ गांव की शादी तक सीमित नहीं है। आधुनिक डिजाइनरों ने इसे नए कपड़ों और नए फैशन के साथ जोड़ना शुरू किया है। कई युवतियां इसे साड़ी, सूट और पारंपरिक परिधानों के साथ पहनना पसंद करती हैं। यानी जिस आभूषण को कभी पहाड़ की बहू-बेटियों की पहचान माना जाता था, वह अब शहरों के फैशन में भी जगह बना रहा है। लेकिन इस बदलाव के साथ एक खतरा भी है।कहीं ऐसा न हो कि गलोबंद बच जाए और उसकी कहानी खो जाए। किस धातु का इस्तेमाल होता था? किस अवसर पर पहना जाता था? इसे कौन बनाता था? शादी में इसका क्या महत्व था? मायके और ससुराल के बीच इसका क्या रिश्ता था? इन सवालों के जवाब भी उसी विरासत का हिस्सा हैं।

पहाड़ के समाज में आभूषण केवल सजने के लिए नहीं होते थे। कई बार वह परिवार की आर्थिक सुरक्षा भी होते थे। मुश्किल समय में गहने बेचकर परिवार ने अपनी जरूरतें पूरी कीं। लेकिन भावनात्मक मूल्य का कोई बाजार नहीं होता। एक मां के लिए अपनी शादी का गलोबंद सिर्फ एक आभूषण नहीं था। उसमें उसके मायके की यादें थीं। बेटी की शादी में जब वही गहना उसे दिया जाता था तो वह एक तरह से परिवार की स्मृति को आगे बढ़ाना होता था। यही कारण है कि पहाड़ के पुराने संदूकों में रखे गहनों को खोलते समय सिर्फ धातु की चमक नहीं दिखाई देती थी। उनमें पुरानी तस्वीरें, पुरानी शादियां और पुरानी पीढ़ियां दिखाई देती थीं।

उत्तराखंड के पहाड़ों से पलायन ने केवल खेत और गांव नहीं बदले। उसने पहनावे और आभूषणों की दुनिया को भी प्रभावित किया जो परिवार गांव से शहर आ गए, उनकी अगली पीढ़ी का जीवन अलग हो गया। पारंपरिक पहनावा रोजमर्रा की जिंदगी से बाहर होता गया। उसके साथ पारंपरिक गहनों का इस्तेमाल भी कम हुआ। आज कई घरों में दादी-नानी के पुराने गहने संदूकों में सुरक्षित हैं, लेकिन उन्हें पहनने वाली पीढ़ी कम होती जा रही है। इसलिए गलोबंद की कहानी केवल एक आभूषण की कहानी नहीं है। यह उस पहाड़ की कहानी है, जो अपनी पुरानी चीजों को बचाने की कोशिश कर रहा है।

गलोबंद को बचाने का मतलब यह नहीं कि नई पीढ़ी को पुराने तरीके से ही जीने के लिए कहा जाए। परंपरा तभी जीवित रहती है जब वह समय के साथ बदलती है। जरूरत है कि स्थानीय कारीगरों को बाजार मिले, पारंपरिक डिजाइन का दस्तावेजीकरण हो और स्कूल-कालेजों तथा सांस्कृतिक आयोजनों में उत्तराखंड के पारंपरिक आभूषणों के बारे में नई पीढ़ी को बताया जाए। क्योंकि जब किसी समाज की चीजें सिर्फ संग्रहालय में रह जाती हैं, तो संस्कृति का एक हिस्सा जीवित होकर भी रोजमर्रा की जिंदगी से गायब हो जाता है। गलोबंद आज फिर फैशन में लौट रहा है। यह अच्छी खबर है। लेकिन उससे भी बड़ी खबर तब होगी जब इसके साथ उसकी कहानी भी लौटे।

धातु की चमक से कहीं ज्यादा इसमें उन हाथों की गर्माहट है, जिन्होंने इसे बनाया। उन माताओं की ममता है, जिन्होंने इसे बेटी को दिया। उन बेटियों की यादें हैं, जिन्होंने इसे संभालकर अगली पीढ़ी तक पहुंचाया। इसलिए अगली बार जब किसी पहाड़ी महिला के गले में गलोबंद दिखाई दे, तो उसे सिर्फ एक आभूषण मत समझिएगा। उसमें एक गांव है, एक परिवार है, एक मां है, एक बेटी है और पहाड़ की कई पीढ़ियों की कहानी है।

चार दिन में उखड़ने लगी सड़क, डामरीकरण की गुणवत्ता पर उठे सवाल

विकासनगर(आरएनएस)। मसूरी-त्यूणी-चकराता मार्ग पर हाल ही में कराया गया डामरीकरण गुणवत्ता को लेकर सवालों के घेरे में आ गया है। बीते माह छावनी बाजार चकराता से बस स्टैंड तक सड़क का डामरीकरण कराया गया था, लेकिन निर्माण कार्य पूरा होने के महज चार दिन बाद ही सड़क की परत उखड़ने लगी। पहली ही बरसात ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता की पोल खोल दी। वर्तमान में चकराता पोस्ट ऑफिस से बस स्टैंड गेट नंबर-1 तक सड़क कई स्थानों पर उखड़ चुकी है और बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। इससे वाहन चालकों और पैदल राहगीरों के लिए दुर्घटना का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क पर जगह-जगह डामर उखड़ने से दोपहिया वाहन चालक सबसे अधिक परेशान हैं। बरसात के दौरान गड्ढों में पानी भर जाने से उनकी गहराई का अंदाजा नहीं लग पाता, जिससे हादसों की आशंका बनी रहती है। इस मार्ग से प्रतिदिन गुजरने वाले स्थानीय निवासी, पर्यटक और स्कूली वाहन भी परेशानी का सामना कर रहे हैं। पूर्व सभासद कमल रावत, स्थानीय निवासी दिनेश चांदना, नारायण कोठारी, देवेंद्र चौहान, राजेंद्र चौहान और रविंद्र सिंह सहित अन्य लोगों ने आरोप लगाया कि डामरीकरण के दौरान ही निर्माण सामग्री की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठाए गए थे। उनका कहना है कि बस स्टैंड क्षेत्र में घटिया गुणवत्ता के डामर का विरोध भी किया गया था। विरोध के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग विभाग ने केवल बस स्टैंड के सीमित हिस्से में गुणवत्ता सुधारने का कार्य किया, लेकिन पोस्ट ऑफिस से बस स्टैंड तक के अन्य हिस्से में कोई सुधार नहीं किया गया। परिणामस्वरूप अब वही हिस्सा सबसे अधिक क्षतिग्रस्त हो गया है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि करोड़ों रुपये की लागत से किए जाने वाले सड़क निर्माण कार्य यदि कुछ ही दिनों में खराब होने लगें तो यह गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने पूरे क्षतिग्रस्त हिस्से का उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से पुनः डामरीकरण कराने तथा निर्माण कार्य की निष्पक्ष तकनीकी जांच कर जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि समय रहते सड़क का पुनर्निर्माण नहीं कराया गया तो वे आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। उनका कहना है कि खराब सड़क के कारण कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है, जिसकी पूरी जिम्मेदारी संबंधित विभाग की होगी।

मानसून के दौरान हरी पत्तेदार सब्जियों को धोते समय इन बातों का रखें ध्यान

मानसून के दौरान हरी पत्तेदार सब्जियां कीटों और बैक्टीरिया से अधिक प्रभावित होती हैं। इसलिए इन्हें इस्तेमाल से पहले अच्छी तरह से धोना बहुत जरूरी है। हालांकि, कई लोग इन सब्जियों को सामान्य पानी से ही धो देते हैं, जो कि सही तरीका नहीं है। आइए आज हम आपको हरी पत्तेदार सब्जियों को धोने के कुछ ऐसे तरीके बताते हैं, जिन्हें आजमाकर आप कीटों और बैक्टीरिया से छुटकारा पा सकते हैं।

नमक के पानी का करें इस्तेमाल

हरी पत्तेदार सब्जियों को धोने के लिए नमक का पानी सबसे अच्छा तरीका है। इसके लिए एक बाल्टी पानी लें और उसमें एक बड़ी चम्मच नमक मिलाएं। अब इस मिश्रण में हरी पत्तेदार सब्जियों को 10-15 मिनट के लिए भिगोकर छोड़ दें। इससे कीट और गंदगी आसानी से निकल जाएगी और सब्जियां ताजगी से भरी रहेंगी। नमक का पानी बैक्टीरिया को भी खत्म करता है, जिससे सब्जियां सुरक्षित रहती हैं।

सिरका भी है असरदार

सिरका एक बढ़िया उपाय है, जो हरी पत्तेदार सब्जियों को धोने में मदद कर सकता है। इसके लिए एक बाल्टी पानी में दो बड़े चम्मच सिरका मिलाएं और इसमें हरी पत्तेदार सब्जियों को 5-10 मिनट तक भिगोकर छोड़ दें। इससे न केवल कीट और गंदगी निकल जाएगी, बल्कि बैक्टीरिया भी मर जाएंगे। इसके बाद सब्जियों को साफ पानी से धो लें। यह तरीका सब्जियों को ताजगी से भरा रखता है और उन्हें सुरक्षित भी बनाता है।

नींबू का रस आएगा काम

नींबू का रस भी हरी पत्तेदार सब्जियों को धोने के लिए अच्छा तरीका हो सकता है। इसके लिए एक बाल्टी पानी में एक नींबू का रस निचोड़ें और इसमें हरी पत्तेदार सब्जियों को 5-10 मिनट तक भिगोकर छोड़ दें। इससे न केवल कीट और गंदगी निकल जाएगी, बल्कि बैक्टीरिया भी मर जाएंगे। इसके बाद सब्जियों को साफ पानी से धो लें।

बेकिंग सोडा का करें उपयोग

बेकिंग सोडा एक ऐसा पदार्थ है, जो हरी पत्तेदार सब्जियों को धोने में मदद कर सकता है। इसके लिए एक बाल्टी पानी में एक चम्मच बेकिंग सोडा मिलाएं और इसमें हरी पत्तेदार सब्जियों को 5-10 मिनट तक भिगोकर छोड़ दें। इससे न केवल कीट और गंदगी निकल जाएगी, बल्कि बैक्टीरिया भी मर जाएंगे। इसके बाद सब्जियों को साफ पानी से धो लें।

गर्म पानी का उपयोग भी है अच्छा उपाय

गर्म पानी का उपयोग करके भी आप हरी पत्तेदार सब्जियों को अच्छे से धो सकते हैं। इसके लिए एक बर्तन में गर्म पानी भरें और उसमें एक चम्मच नमक मिलाएं। अब हरी पत्तेदार सब्जियों को इस पानी में डालकर 5-10 मिनट तक छोड़ दें। इससे कीट और गंदगी निकल जाएगी, बैक्टीरिया भी मर जाएंगे। इसके बाद सब्जियों को ठंडे पानी से धो लें।

इस प्रकार मेंहदी लगेगी खूबसूरत

हमारे देश में मेंहदी लगाना न केवल सोलह श्रृंगार में से एक है बल्कघि् इसे शुभ शगुन के तौर पर भी देखा जाता है। भारत में कोई भी खास मौका हो, हाथों में मेंहदी रचाए बिना पूरा नहीं माना जाता। पर मेंहदी तभी खूबसूरत लगती है, जब उसका रंग गहरा हो और यह सही से रचे। मेहंदी का एक खास गहरा लाल रंग होता है जो हाथों पर बेहद खूबसूरत लगता है।

कई बार ऐसा होता है कि मेंहदी लगी तो बहुत अच्छी होती है लेकिन सही से न रचने के कारण खूबसूरत डिजाइन भी खिलकर नहीं आ पाता। ऐसे में आप इन उपायों को अपनाकर गहरी और खूबसूरत मेंहदी रचा सकती हैं। पहले यह तय कर लें कि आपकी मेंहदी का घोल अच्छे से तैयार किया गया हो।

इन उपायों को अपनाने से गहरी रचेगी मेंहदी

मेंहदी लगाने के बाद धैर्य रखना बहुत जरूरी है। कम से कम पांच से छह घंटे के लिए मेंहदी को हाथों पर रचे रहने दें। इससे मेंहदी का रंग गहरा चढ़ता है।

नींबू और चीनी के घोल के इस्तेमाल से भी मेंहदी का रंग गहरा चढ़ता है। दरअसल, इस घोल को लगाने से मेंहदी ज्यादा देर के लिए हाथों में चिपकी रहती है और इससे उसका रंग गहरा हो जाता है।

मेंहदी छुड़ाने के लिए पानी का इस्तेमाल न करें। हो सके तो 10 से 12 घंटों तक हाथों पर पानी के इस्तेमाल से बचें। साबुन के इस्तेमाल से दूर ही रहें तो बेहतर होगा। मेंहदी छुड़ाने के बाद सरसों के तेल को हाथों पर मल लें। इन उपायों को अपनाने से मेंहदी का रंग गहरा चढ़ता है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

एसएसपी श्वेता चौबे ने थाना प्रभारियों को लगाई फटकार, लापरवाही बर्दाश्त नहीं

संवाददाता

टिहरी। समीक्षा के दौरान अपेक्षित प्रगति न पाए जाने एवं खराब प्रदर्शन पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्रीमती श्वेता चौबे ने कड़ा रुख अपनाते हुए संबंधित थाना प्रभारियों को फटकार लगाई।

आज यहां जनपद में नशा एवं मादक पदार्थों के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस नीति के तहत प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने तथा एनडीपीएस अधिनियम से संबंधित अभियोगों की प्रगति की समीक्षा हेतु आज वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक टिहरी गढ़वाल श्रीमती श्वेता चौबे द्वारा जनपदीय एएनटीएफ एवं जनपद के समस्त थाना प्रभारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विस्तृत समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

बैठक के दौरान एसएसपी ने प्रत्येक थाने में दर्ज एनडीपीएस अभियोगों, विवेचनाओं की प्रगति, वांछित आरोपियों की गिरफ्तारी, आरोप पत्रों की स्थिति, जब्त मादक पदार्थों के निस्तारण, पीट एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत की गई एवं प्रस्तावित निरोधात्मक कार्रवाई, गैंगस्टर एक्ट के अंतर्गत की गई कार्रवाई, संपत्ति जब्ती तथा मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियानों की बिंदुवार समीक्षा की।

समीक्षा के दौरान अपेक्षित प्रगति न पाए जाने एवं खराब प्रदर्शन पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने कड़ा रुख अपनाते हुए संबंधित थाना प्रभारियों को फटकार लगाई। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि एनडीपीएस से संबंधित प्रकरणों की विवेचना में किसी भी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही या विलंब स्वीकार नहीं किया जाएगा। सभी लंबित विवेचनाओं का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। एसएसपी ने निर्देशित किया कि मादक पदार्थों की तस्करी में संलिप्त आदतन एवं पेशेवर तस्करों के विरुद्ध पीट एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत निरोधात्मक कार्रवाई के प्रस्ताव प्राथमिकता के आधार पर तैयार कर शीघ्र प्रेषित किए जाएं। साथ ही ऐसे तस्करों के विरुद्ध आवश्यकतानुसार गैंगस्टर एक्ट, संपत्ति जब्ती एवं अन्य वैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, ताकि उनके आपराधिक नेटवर्क एवं आर्थिक स्रोतों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।

उन्होंने सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया कि जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय नागरिकों से मादक पदार्थों की तस्करी के संबंध में प्राप्त शिकायतों एवं सूचनाओं पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई करते हुए संबंधित तस्करों के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट, गैंगस्टर एक्ट एवं अन्य प्रासंगिक विधिक प्रावधानों के अंतर्गत कठोर वैधानिक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

उन्होंने स्पष्ट किया कि ऐसी शिकायतों में किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। बैठक में जब्त मादक पदार्थों (केस प्रॉपर्टी) के समयबद्ध निस्तारण पर भी विशेष जोर दिया गया। उन्होंने सभी थाना प्रभारियों को न्यायालयीन प्रक्रिया पूर्ण कर नियमानुसार मालों के शीघ्र निस्तारण की कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए, जिससे अनावश्यक लंबित मामलों का शीघ्र निष्पादन हो सके। इसके अतिरिक्त सभी थाना प्रभारियों को अपने-अपने थाना क्षेत्रों में मादक पदार्थों की तस्करी, बिक्री एवं अवैध गतिविधियों में संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध नियमित अभियान चलाने, सूचना तंत्र को मजबूत करने, संवेदनशील क्षेत्रों में सतत निगरानी रखने तथा युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए गए।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने दोहराया कि जनपद में नशा एवं मादक पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति के तहत लगातार प्रभावी कार्रवाई जारी रहेगी। एनडीपीएस एक्ट, पीट एनडीपीएस एक्ट गैंगस्टर एक्ट, संपत्ति जब्ती एवं अन्य वैधानिक प्रावधानों का प्रभावी उपयोग कर नशा तस्करों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। साथ ही इस दिशा में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही भी तय की जाएगी।

शब्द सामर्थ्य -031

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. रूचिकर लगने वाली, रूचि के अनुकुल, चुनी हुई 3. राजाओं के बैठने का आसन 6. श्रमिक 7. कार्य, काज 9. वाद्ययंत्र आदि बजाने वाला 10. सहारा, सहायक वस्तु 11. शर्म, लाज, हया 12. मक्खन, माखन 14. श्रीमती राबड़ी देवी इस प्रदेश की मुख्यमंत्री हैं 15. चंद्रमा, रजनीश, चांद 18. पुस्तक 20. अवधि, समय 21. तर्क वितर्क और कहा-सुनी, जबानी झगड़ा 22. सूरत, आकार 23. झुका हुआ, नत।

ऊपर से नीचे

1. पंद्रह दिन का समय, शुक्ल या कृष्ण पक्ष 2. आग बुझाने की मशीन 3. हिंदु विवाहित स्त्री के मांग में भरने का लाल चूर्ण 4. पराजय, माला 5. मुंह ढकने का कपड़ा, घुंघट 8. चंदन, दक्षिण का एक पर्वत 10. व्यवस्थित करना, सजाना, स्वभाव आदि का परिष्कार, शुद्ध संबंधी कृत्य 12. विशालता, बड़प्पन, महान होने का भाव 13. अड़चन, रुकावट 15. जमीन के अंदर गहरा और लंबा रास्ता, अच्छे रंग का 16. बेवकूफ, मूर्ख, अहमक 17. औसत के हिसाब से 18. कृषक 19. अधिक, ज्यादा।

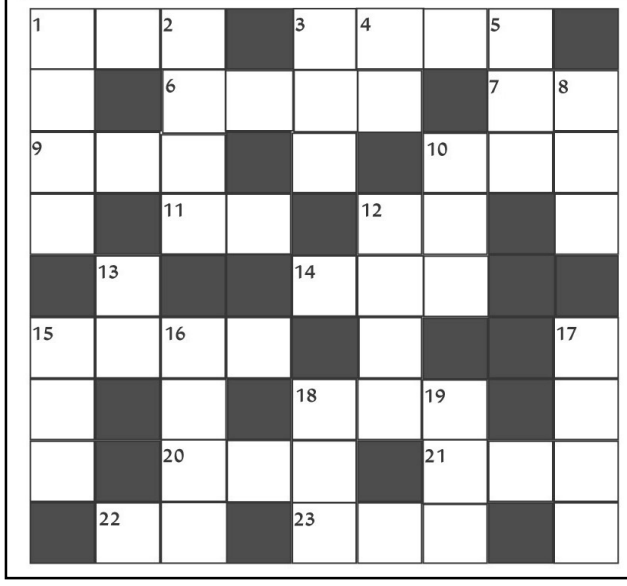

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 30 का हल

ज	ल		आ	वा	जा	ही		
मा		खू	ब		दू	र	स्थ	
ना	दा	न		सा	ग		ल	क्ष्य
	न	ख		त	र	ल		
	वी	रा	न			च	ट	क
	र	ब		आ	ज	क	ल	
			आ	ग		दा	ना	
	अ	ग	र	म	ग	र		क्रो
भा	भी		ती	न			व	ध

चकोतरा, आंखों की रोशनी बढ़ाने के साथ-साथ गठिया रोग में हैं फायदेमंद

संतरे और नींबू के परिवार से संबंध रखने वाला चकोतरा फल औषधीय गुणों से भरपूर होता है। ये बाहर से पीला और अंदर से लाल होता है। प्रसाद के तौर पर छठी मां को डाभ नींबू का अर्पण किया जाता है। बदलते मौसम में डाभ नींबू किसी वरदान से कम नहीं है। इसे खाने से कई मौसमी बीमारियां दूर होती हैं।

डाभ नींबू के फायदे

वेट लॉस में फायदेमंद: चकोतरा विटामिन ए और विटामिन सी से भरपूर होता है और इसमें पानी की मात्रा भी अधिक होती है। इसमें कैलोरी बहुत कम होती है इसलिए ये वेट लॉस के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है।

जरूरी पोषक तत्व: विटामिन के अलावा चकोतरा मैग्नीशियम, पोटैशियम और डायटरी फाइबर से भरपूर होता है। इसके सेवन से सारे जरूरी पोषक तत्व मिल जाते हैं और शरीर अंदर से सेहतमंद रहता है।

ऊर्जा से भरपूर: डाभ नींबू का जूस पीने से शरीर को तुरंत ऊर्जा मिल जाती है और सारी थकावट दूर हो जाती है। इसके अलावा ये पेट की गर्मी और जलन की समस्या को भी दूर करता है।

आंखों के लिए फायदेमंद: गुलाबी और लाल चकोतरा में बीटा कैरोटीन होता है जो आंखों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। हर दिन एक चकोतरा खाने से आंखों की समस्या दूर होती है। ये आंखों की रोशनी भी बढ़ाने का काम करता है।

विटामिन सी से भरपूर: डाभ नींबू विटामिन सी से भरपूर होता है और हड्डियों को नुकसान से बचाता है। विटामिन सी में पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट शरीर में इम्यूनिटी और कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाता है।

गठिया के रोग में फायदेमंद: डाभ नींबू गठिया जैसी समस्याओं के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। इसमें भरपूर मात्रा में कैल्शियम होता है जो हड्डियों को मजबूत बनाता है और गठिया रोग को दूर करता है।

पेट के लिए अच्छा: डाभ नींबू पाचन क्रिया को भी तंदरुस्त रखता है। ये खाने में आसानी से पच जाता है और पेट को हल्का और ठीक रखता है। इसे खाने से पेट में गैस की समस्या भी दूर होती है।

दिल के लिए अच्छा: डाभ नींबू दिल की बीमारियों को भी कम करता है। इसमें मौजूद फ्लेवोनोइड्स हृदय रोगों पर सकारात्मक प्रभाव दिखाते हैं। हालांकि जिन लोगों को हाई ब्लड प्रेशर की शिकायत रहती है उन्हें ये फल खाने से बचना चाहिए।

बर्फ का इस्तेमाल आप खूबसूरती के लिए भी कर सकते हैं

आप बर्फ का इस्तेमाल तो खूब करते होंगे। लेकिन क्या आप जानते है बर्फ का इस्तेमाल आप खूबसूरती के लिए भी कर सकते हैं। बर्फ आपके चेहरे को तरोताजा रखने के साथ-साथ अपके चेहरे के डार्क सर्कल्स भी खत्म कर देती है।

चेहरे के दाग-धब्बों में

बर्फ दाग-धब्बों को ठीक करने में बहुत सहायक है। इसके लिए एक कॉटन के कपड़े में बर्फ रख उसे अपने चेहरे और गर्दन में लगाएं। बर्फ एक ही जगह न लगाएं, इससे त्वचा लाल हो सकती है। बर्फ लगाने से आपके चेहरे के दाग-धब्बे जल्द खत्म हो जाएंगे।

डार्क सर्कल्स के लिए

आपको शायद ही पता हो कि चेहरे पर बर्फ लगाने से डार्क सर्कल्स दूर हो जाते हैं और चेहरा तरोताजा रहता है। अगर आपको बहुत ज्यादा मेकअप लगाना पसंद नहीं है तो नियमित रूप से बर्फ का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा करने से चेहरा फ्रेश बना रहेगा।

मेकअप

अगर आप चाहती हैं कि मेकअप ज्यादा वक्त तक रुका रहे तो इसके लिए मेकअप करने से पहले चेहरे पर बर्फ लगाएं। इसके बाद इसे साफ कॉटन के कपड़े से सुखा लें फिर मेकअप लगाएं। अगर आप सनबर्न या टैनिंग की समस्या से परेशान हैं तो इसके लिए दिन में एक बार चेहरे में बर्फ का इस्तेमाल करें। इससे आपका चेहरा सौम्य रहेगा।

पिंपल से पाएं छुटकारा

अगर आप अपने चेहरे के पिंपल्स से बहुत परेशान हैं और आपको समझ नहीं आ रहा कि क्या किया जाए तो हम आपको बताते हैं कि पिंपल्स वाली जगह पर 10-15 मिनट के लिए बर्फ लगाइए। ऐसा करने से पिंपल्स गायब हो जाएंगे।

मांसपेशियों में दर्द से मिले राहत

अगर आप मांसपेशियों में दर्द से परेशान हैं तो इसके लिए आप बर्फ का इस्तेमाल करें। आपको काफी फायदा मिलेगा। इसके लिए जिस जगह दर्द हो उस जगह कुछ देर बर्फ से सिकाई करें।

आंखों की समस्या

आजकल कंप्यूटर स्क्रीन के आगे बैठे रहने से आंखों की समस्या काफी होने लगी है। इसके लिए हम डॉक्टर के पास जाते हैं या घर पर ही कोई दवा का इस्तेमाल करते हैं। इस समस्या से आपको बर्फ निजात दिला सकती है और आपको ताजगी भी महसूस होगी। इसके लिए एक बर्फ के टुकड़े को एक मुलायम कपड़े में लपेटकर इसे आंखों के ऊपर थोड़ी देर के लिए रखिए, राहत मिलेगी।

मैं इंतजार करना पसंद करूंगी, लेकिन बिना जुड़ाव के किरदार नहीं: अद्रिजा रॉय

अनुपमा में राही कपाड़िया के किरदार से अभिनेत्री अद्रिजा रॉय ने घर-घर में पहचान बनाई है। अद्रिजा ने कहा कि वह वहीं किरदार निभाना पसंद करती है, जिससे उन्हें दिल से जुड़ाव महसूस होता है। वहीं उन्होंने आगे कहा कि अब महिलाओं के लिए लिखे जाने वाले किरदारों में काफी सुधार आया है और दर्शक भी महिला केंद्रित कहानियों को खुले दिल से स्वीकार कर रहे हैं। अद्रिजा रॉय ने कहा, मुझे लगता है कि चीजें पहले से काफी बेहतर हुई हैं। अब महिलाओं को ज्यादा अहमियत रखने वाले किरदार मिल रहे हैं। हालांकि अभी भी सुधार की गुंजाइश है, लेकिन अच्छी बात यह है कि दर्शक अब महिलाओं के नेतृत्व वाली कहानियों को स्वीकार कर रहे हैं। यह इंडस्ट्री के लिए एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने कहा कि ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि जब कोई किरदार लोकप्रिय हो जाता है तो लोग उसी तरह के रोल में कलाकार को देखने लगते हैं।

उन्होंने कहा, जब कोई भूमिका लोकप्रिय हो जाती है तो लोग आपको उसी अंदाज में देखने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि आपने उस किरदार को अच्छी तरह निभाया है। मैं इसके लिए किसी को दोष नहीं देती। लेकिन एक कलाकार के तौर पर मैं हमेशा खुद को और दर्शकों को सरप्राइज करना चाहती हूं। मैं एक ही तरह के किरदार बार-बार नहीं करना चाहती। मेरे लिए हर नया रोल कुछ नया सीखने का मौका होना चाहिए।

अद्रिजा ने अपने करियर के फैसलों को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा, हर अभिनेता चाहता है कि उसके पास चुनने के लिए बहुत सारे विकल्प हों, लेकिन यह इंडस्ट्री हमेशा इस तरह काम नहीं करती। कई बार कोई अच्छा प्रोडक्शन हाउस आपको ऐसा किरदार देता है, जो शायद आपकी पहली पसंद न हो। ऐसे में पूरी तस्वीर देखनी चाहिए। कहानी क्या है, टीम कैसी है और किरदार शो में क्या योगदान दे रहा है, इन सभी चीजों को समझना जरूरी होता है। हर स्थिति में कोई एक सही या गलत जवाब नहीं होता। हर कलाकार को अपने हिसाब से फैसला लेना पड़ता है।

बातचीत के दौरान अद्रिजा ने खुलासा किया कि उन्होंने अपने करियर में कुछ ऐसे प्रोजेक्ट्स को मना किया है, जिनसे वह खुद को जोड़ नहीं पाईं।

उन्होंने कहा, हां, मैंने कुछ प्रोजेक्ट्स के लिए मना किया है। ऐसा इसलिए नहीं था कि वे खराब थे, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं उन किरदारों से जुड़ाव महसूस नहीं कर पाई। अगर मैं किसी भूमिका पर विश्वास नहीं करती हूं, तो मेरे लिए उसके साथ न्याय करना मुश्किल हो जाता है। मैं इंतजार करना पसंद करूंगी, लेकिन ऐसा काम करना चाहती हूं जो मुझे अंदर से उत्साहित करे।

सिल्क साड़ी में जाह्नवी कपूर ने बिखेरा जलवा, ट्रेडिशनल आउटफिट में लगाया बोल्डनेस का तड़का

बॉलीवुड की यंग और खूबसूरत एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर अपने बेहतरीन फैशन सेंस के लिए जानी जाती हैं। हाल ही में उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं, जो इंटरनेट पर तेजी से वायरल हो रही हैं।

इन लेटेस्ट तस्वीरों में जाह्नवी का एक अलग ही अंदाज देखने को मिल रहा है, जहां उन्होंने भारतीय परंपरा को बोल्डनेस के साथ पेश किया है। तस्वीरों में जाह्नवी कपूर ने एक बेहद खूबसूरत लैवेंडर और गोल्डन शेड वाली सिल्क साड़ी पहनी हुई है। साड़ी का बॉर्डर काफी हैवी है, जो इसे बेहद रॉयल लुक दे रहा है।

साड़ी के साथ जाह्नवी ने मैचिंग स्ट्रैपलेस स्टाइल ब्लाउज कैरी किया है, जो उनके इस एथनिक लुक में मॉडर्न और ग्लैमरस टच जोड़ रहा है।

तस्वीरों में जाह्नवी एक से बढ़कर एक सेक्सी और अट्रैक्टिव पोज देते नजर आ रही हैं। वह अपना परफेक्ट फिगर फ्लॉन्ट करती दिख रही हैं। उनके इन बोल्ड पोज ने ट्रेडिशनल लुक में भी हॉटनेस का तड़का लगा दिया है।

जाह्नवी ने न्यूड-ग्लॉसी लिपस्टिक, सटल मेकअप, विंग्ड आईलाइनर और माथे पर एक छोटी सी बिंदी के साथ अपने चेहरे की खूबसूरती को निखारा है।

इस रॉयल लुक को पूरा करने के लिए जाह्नवी ने अपने बालों का एक नीट और क्लीन स्लीक जूड़ा बनाया हुआ है, जिसे पारंपरिक हेयर एक्सेसरीज से सजाया गया है।

ज्वेलरी की बात करें तो उन्होंने गले में एक बेहद हैवी कुंदन और पर्ल का चोकर नेकलेस, मैचिंग झुमके, हाथों में ढेर सारी खूबसूरत चूड़ियां, बाजूबंद और अंगूठियां पहनी हुई हैं, जो उनके लुक में चार चांद लगा रहे हैं।

कांवड़ मेले में खाद्य सुरक्षा विभाग ने छापेमारी की

हरिद्वार (आरएनएस)। कांवड़ मेले के दौरान खाद्य सुरक्षा विभाग ने विभिन्न क्षेत्रों में होटल, ढाबों और रेस्टोरेंट का निरीक्षण कर नौ खाद्य नमूने जांच के लिए भेजे। निरीक्षण में गड़बड़ी मिलने पर खाद्य सामग्री नष्ट कराते हुए संचालकों को स्वच्छता संबंधी निर्देश दिए। कांवड़ मेले के दौरान श्रद्धालुओं को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिए खाद्य सुरक्षा विभाग ने विभिन्न क्षेत्रों में अभियान चलाया। सहायक आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन हरिद्वार के नेतृत्व में टीम ने निरीक्षण किया। टीम ने प्रमुख कांवड़ यात्रा मार्गों पर स्थित खाद्य प्रतिष्ठानों में साफ-सफाई, खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और रसोई की स्थिति जांची। इस दौरान चना दाल, ब्रेड पकोड़ा और आलू की सब्जी सहित कुल नौ नमूने जांच के लिए प्रयोगशाला भेजे गए। निरीक्षण के दौरान एक प्रतिष्ठान में कोल्ड ड्रिंक की दो लीटर की चार बोतलों की लेबलिंग में गड़बड़ी मिलने पर उन्हें मौके पर नष्ट कराया गया। एक अन्य प्रतिष्ठान में खाद्य सामग्री के रखरखाव में खामियां मिलने पर करीब एक किलो मसाला नष्ट कराया गया। अधिकारियों ने संचालकों को प्रतिष्ठानों में साफ-सफाई और स्वच्छता बनाए रखने, खाद्य सामग्री का उचित भंडारण करने, भोजन को ढककर रखने और ताजा भोजन ही श्रद्धालुओं को परोसने के निर्देश दिए। पंजीकरण और लाइसेंस को प्रतिष्ठान में प्रदर्शित करने को भी कहा गया। जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी एमएन जोशी ने बताया कि विभाग की टीम ने बैरागी कैंप पार्किंग, रोडीबेलवाला पार्किंग, गऊघाट और हरकी पैड़ी समेत विभिन्न क्षेत्रों में भी खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच की।

चार साल बाद फिर खुलेगा गाड़ीघाट का स्लाटर हाउस

कोटद्वार(आरएनएस)। नगर निगम प्रशासन गाड़ीघाट स्थित करीब 13 वर्ष पुराने स्लाटर हाउस (बूचड़खाना) को दोबारा संचालित करने जा रहा है। इसके लिए टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। पिछले चार वर्षों से बूचड़खाना बंद था। नगर निगम को भी 7.68 लाख की आमदनी होगी। पहले डिग्री कॉलेज मार्ग स्थित जौनपुर में बूचड़खाना संचालित होता था, लेकिन स्थानीय लोगों के विरोध के बाद उसे बंद कर दिया गया था। इसके बाद वर्ष 2013 में तत्कालीन नगर पालिका ने गाड़ीघाट में करीब 24 लाख रुपये के बजट से आधुनिक स्लाटर हाउस का निर्माण कराया। वर्ष 2022 में जरूरी उपकरण उपलब्ध होने पर इसका संचालन शुरू किया गया और एक स्थानीय संचालक को 1.20 लाख रुपये में जिम्मेदारी सौंपी गई। संचालन अवधि समाप्त होने के बाद यह फिर बंद हो गया। नगर निगम क्षेत्र में वर्तमान में 100 से अधिक मांस की दुकानें संचालित हो रही हैं। क्षेत्रवासी लंबे समय से बूचड़खाने का संचालन शुरू कराने की मांग उठाते आ रहे हैं जिस पर नगर निगम की ओर से एक बार फिर स्लाटर हाउस का संचालन शुरू करने की कवायद शुरू की गई। नगर आयुक्त पीएल शाह का कहना है कि स्लाटर हाउस के लिए टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। साथ ही जिस व्यक्ति के नाम टेंडर खुला था उसके साथ स्लाटर हाउस का निरीक्षण किया जा चुका है। स्लाटर हाउस की खामियों को दूर करने के बाद विधिवत संचालन शुरू कर दिया जाएगा।

सू- दोकू क्र.031

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 30 का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3		2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7

बाजपुर की मतदाता सूची से 273 नाम हटाने के षड्यंत्र पर आक्रोश

काशीपुर(आरएनएस)। बाजपुर विधानसभा क्षेत्र की नगर पालिका परिषद महुआखेड़ागंज के अध्यक्ष रिजवान अहमद के नेतृत्व में जनप्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों ने एसडीएम कोर्ट परिसर के बाहर प्रदर्शन कर धरना दिया।

आरोप है कि झूठे और भ्रामक शपथ पत्रों के आधार पर 273 वास्तविक मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से हटाने की साजिश की जा रही है।उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आपत्तियां निरस्त कर कटे हुए नाम दोबारा नहीं जोड़े गए और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हुई, तो वे उग्र आंदोलन करने को मजबूर होंगे। प्रदर्शन के बाद अध्यक्ष रिजवान अहमद ने उपजिलाधिकारी रिचा सिंह को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण कराया जा रहा है। जिला निर्वाचन अधिकारी की ओर से प्रकाशित प्रारूप मतदाता सूची के बूथ संख्या 141, 142, 145 और 146 में दर्ज 273 मतदाता अपने दिए गए पते पर स्थायी रूप से निवास करते हैं। उनका आरोप है कि कुछ असामाजिक तत्वों ने फर्जी फॉर्म-7 प्रस्तुत कर इन मतदाताओं के नाम हटाने का प्रयास किया है। उन्होंने इसे जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 31 तथा भारतीय न्याय संहिता की धारा 212 के तहत गंभीर अपराध बताया। सभासद पति परवेज आलम ने मांग की कि 273 मतदाताओं के नामों पर लगाई गई आपत्तियां तत्काल हटाई जाएं और फर्जी आवेदन करने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कड़ी कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि कई मामलों में आपत्ति करने वाले ने अपने ही नाम पर आपत्ति दर्ज कराई है, जिससे पूरे मामले में गड़बड़ी की आशंका और मजबूत होती है। उन्होंने मतदाता सूची पुनरीक्षण की प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी ढंग से संचालित करने की भी मांग की। यहां सुभाष, परवेज आलम, शकील, मुमताज, अमर सिंह, नाजिर, वसीम, नाजिम, सगीर, अब्दुल वाहिद, शफीक, फइन आदि मौजूद रहे।

पुलिंडा मार्ग और ग्रास्टनगंज में धमके हाथी

कोटद्वार(आरएनएस)। शहर से सटे पुलिंडा मार्ग और ग्रास्टनगंज क्षेत्र में हाथियों की लगातार आवाजाही से लोगों में दहशत है। शुक्रवार सुबह तीन हाथी पुलिंडा मार्ग पर पहुंच गए और काफी देर तक सड़क पर ही डटे रहे। इससे मार्ग पर वाहनों और राहगीरों की आवाजाही प्रभावित रही। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और हाथियों को जंगल की ओर खदेड़ा। शुक्रवार सुबह भी तीन हाथी सड़क पर पहुंच गए जिससे लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। हाथियों के सड़क पर डटे रहने से मार्ग पर यातायात बाधित रहा और लोगों में अफरा-तफरी की स्थिति बन गई।

उधर, ग्रास्टनगंज क्षेत्र में भी हाथी की चहलकदमी लगातार जारी है। शुक्रवार सुबह हाथी आबादी क्षेत्र के समीप पहुंच गया जिससे स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। सूचना पर पहुंचे वन कर्मियों ने पटाखे फोड़कर हाथी को वापस जंगल की ओर खदेड़ दिया और क्षेत्र में निगरानी बढ़ा दी। कोटद्वार के रेंजर विपिन चंद्र जोशी ने बताया कि पुलिंडा मार्ग और ग्रास्टनगंज क्षेत्र में हाथियों की गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है। वन विभाग की टीम नियमित गश्त कर रही है। उन्होंने लोगों से अपील की कि हाथी दिखाई देने पर उसके पास जाने या वीडियो बनाने का प्रयास न करें, सुरक्षित दूरी बनाए रखें और तत्काल वन विभाग को सूचना दें। इससे किसी भी संभावित दुर्घटना से बचा जा सकता है।

15 फीट सड़क पर अतिक्रमण का आरोप, एसडीएम से लगाई गुहार

कोटद्वार(आरएनएस)। भाबर क्षेत्र के वार्ड नंबर-28, नींबूचौड़ स्थित एक कॉलोनी के निवासियों ने रजिस्ट्री में दर्ज 15 फीट चौड़ी सड़क पर अतिक्रमण हटाने की मांग को लेकर वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी मंजू शर्मा के माध्यम से एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। कॉलोनीवासियों का कहना है कि प्लॉट खरीदते समय उन्हें 15 फीट चौड़ी सड़क उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया गया था और इसका स्पष्ट उल्लेख उनकी रजिस्ट्री में भी दर्ज है। इसके बावजूद सड़क की भूमि पर कथित अतिक्रमण होने से आज तक निर्धारित चौड़ाई की सड़क विकसित नहीं हो सकी है। कॉलोनीवासियों ने एसडीएम से मांग की है कि रजिस्ट्री, स्वीकृत लेआउट और राजस्व अभिलेखों के आधार पर मौके का सीमांकन कराया जाए। यदि जांच में सड़क की भूमि पर अतिक्रमण की पुष्टि होती है तो उसे तत्काल हटाते हुए रजिस्ट्री के अनुसार 15 फीट चौड़ी सड़क उपलब्ध कराई जाए। ज्ञापन सौंपने वालों में मधुसूदन चौहान, अनीता बिष्ट, दीपा देवी, दिव्या रावत, निर्मला बड़थ्वाल, अंकिता नेगी, महावीर सिंह नेगी, संतोषी नेगी, सोनिका असवाल, राजेश बलोधी शामिल रहे।

पॉलीहाउस तकनीक से बढ़ाएं आय, किसानों को दिया प्रशिक्षण

बागेश्वर(आरएनएस)। नाबार्ड की ग्रामीण अवसंरचना विकास निधि योजना के तहत निर्मित पॉलीहाउसों के माध्यम से उच्च मूल्य वाली फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विकास भवन सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जिले के तीनों विकासखंडों के पॉलीहाउस लाभार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए मुख्य विकास अधिकारी नरेश कुमार ने कहा कि आधुनिक और तकनीक आधारित कृषि स्वरोजगार का सशक्त माध्यम बन रही है। उन्होंने कहा कि पॉलीहाउस तकनीक अपनाकर किसान ऑफ-सीजन सब्जियां, व्यावसायिक फूल और अन्य उच्च मूल्य वाली फसलों का उत्पादन कर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। प्रशिक्षणके दौरान कृषि एवं उद्यान विशेषज्ञों ने पॉलीहाउस प्रबंधन, उन्नत बीज चयन, पोषक तत्व प्रबंधन, सूक्ष्म सिंचाई, रोग एवं कीट नियंत्रण, कोल्ड स्टोरेज, सुरक्षित भंडारण तथा उत्पादों के विपणन संबंधी जानकारी दी। साथ ही उद्यान विभाग की 'सचल दल' सेवा से भी कृषकों को अवगत कराया गया। कार्यक्रम में जिला उद्यान अधिकारी हरीश चंद्र आर्या, कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार, विभागीय अधिकारी और प्रगतिशील किसान मौजूद रहे।

जसपुर में चौथे दिन 690 वोटरों पर लगाई आपत्तियां

काशीपुर (आरएनएस)। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में आपत्तियों का सिलसिला जारी है। चौथे दिन तक 690 लोगों ने मतदाताओं के नामों पर आपत्ति दर्ज कराई है। अब तक करीब 3500 मतदाताओं के खिलाफ आपत्तियां दर्ज हो चुकी हैं। बढ़ती आपत्तियों से मतदाताओं में चिंता बनी हुई है।विधायक आदेश चौहान ने एसडीएम से मुलाकात कर आपत्तियों के संबंध में चर्चा की। उन्होंने कहा कि आपत्तियों की सुनवाई के दौरान आपत्ति दर्ज कराने वाले लोगों को भी बुलाया जाए। इसके अलावा उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों को एसआईआर की जानकारी दी और नोटिस मिलने पर संयम से प्रक्रिया पूरी करने की अपील की। बताया गया कि सोमवार से मतदाताओं पर आपत्ति दर्ज करने की प्रक्रिया शुरू हुई थी। मंगलवार को पूरे उत्तराखंड में जसपुर में सबसे अधिक 1271 आपत्तियां दर्ज की गई थीं।विधायक द्वारा लोगों को जागरूक करने और फर्जी आपत्तियां दर्ज कराने वालों के खिलाफ पुलिस में शिकायत करने की अपील के बाद संख्या में कमी आई, लेकिन प्रक्रिया जारी है। गुरुवार को भी 690 आपत्तियां दर्ज की गईं। आरोप है कि कुछ लोगों ने जीवित मतदाताओं को मृत दर्शाकर भी आपत्तियां दर्ज कराई हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. बीबीआरसी पुरुषोत्तम ने एक व्यक्ति द्वारा पांच से अधिक मतदाताओं पर आपत्ति दर्ज कराने की स्थिति में जांच के निर्देश दिए हैं। विधायक ने ग्राम कुंडा और सरवरखेड़ा पहुंचकर ग्रामीणों को एसआईआर प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने फर्जी तरीके से आपत्ति दर्ज कराने वालों के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराने को कहा। इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष शैलेंद्र गहलौत, वरुण चौधरी, सुखवीर भुल्लर, नगराध्यक्ष मोहम्मद नाजिम, कमरुद्दीन, धर्मेंद्र कुमार, सर्वेश सिंह, महबूब अली, मुजाहिद, अभिषेक, राहुल, नफीस कदीरी, मोहम्मद रफी, मेहंदी हसन सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

घर में घुसकर मारपीट में आधा दर्जन लोगों पर मुकदमा

संवाददाता

देहरादून। घर में घुसकर मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने के मामले में पुलिस ने आधा दर्जन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार सिद्धपुरम कालोनी निवासी दिव्याशु ने डोईवाला कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि ईशान, प्रियांशु, कुणाल सिंह, आदित्य, रजनी अपने चार पांच अन्य साथियों के साथ उसके घर में आये और उसके साथ गाली गलौच करने लगे। उसने जब उनका विरोध किया तो उन्होंने उसके साथ मारपीट करनी शुरू कर दी। जब आसपास के लोग वहां पर आये और उसको उनकी चंगुल से बचाया तो वह उसको जान से मारने की धमकी देकर चले गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

कांग्रेस का बड़ा प्लान, यशपाल आर्य..

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

ऐसे में कांग्रेस अगर आर्य को सामने रखती है तो मुकाबला सीधे दो राजनीतिक चेहरों के बीच दिखाई देने लगेगा। धामी की सबसे बड़ी ताकत उनकी युवा छवि और भाजपा संगठन का मजबूत नेटवर्क है। वहीं आर्य के पक्ष में लंबा प्रशासनिक और राजनीतिक अनुभव तथा विभिन्न सामाजिक समूहों में उनकी पहचान को रखा जा सकता है। यानी कांग्रेस की रणनीति सफल हुई तो 2027 का चुनाव केवल भाजपा बनाम कांग्रेस नहीं, बल्कि धामी बनाम आर्य की राजनीतिक लड़ाई के रूप में भी पेश हो सकता है।

यशपाल आर्य को आगे करने का एक और राजनीतिक संदेश क्षेत्रीय संतुलन से जुड़ा है। उत्तराखंड की राजनीति में कुमाऊं और गढ़वाल के बीच नेतृत्व के संतुलन का सवाल हमेशा महत्वपूर्ण रहा है। आर्य के चेहरे के साथ कांग्रेस तराई और कुमाऊं के मतदाताओं को साधने की कोशिश कर सकती है। साथ ही पहाड़ में पार्टी के पुराने जनाधार को वापस खड़ा करने के लिए अलग रणनीति अपनाई जा सकती है। कांग्रेस के लिए यह चुनाव इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उत्तराखंड में सत्ता परिवर्तन की परंपरा को वह अपने पक्ष में भुनाने की कोशिश करेगी। पार्टी का संदेश हो सकता है कि भाजपा को लगातार दो कार्यकाल देने के बाद अब मतदाता बदलाव की ओर देख रहे हैं।

फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या कांग्रेस हाईकमान वास्तव में यशपाल आर्य को मुख्यमंत्री चेहरे के रूप में घोषित करेगा? सूत्रों की चर्चा को अगर राजनीतिक संकेत मानें तो कांग्रेस नेतृत्व उत्तराखंड के चुनाव को इस बार अधिक स्पष्ट नेतृत्व के साथ लड़ने की तैयारी में है। लेकिन पार्टी के भीतर की खींचतान और टिकट वितरण से लेकर नेतृत्व के सवाल तक कई ऐसे मोर्चे हैं, जिन पर अंतिम फैसला आसान नहीं होगा। कांग्रेस यदि आर्य को आगे करती है तो यह केवल एक नेता को मुख्यमंत्री पद का चेहरा बनाना नहीं होगा। यह उत्तराखंड की जातीय, क्षेत्रीय और राजनीतिक गणित को नए सिरे से व्यवस्थित करने की कोशिश होगी। आखिरकार चुनाव केवल चेहरों से नहीं जीते जाते। बेरोजगारी, पलायन, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, आपदा, महंगाई, भ्रष्टाचार, चारधाम यात्रा और पहाड़ की बुनियादी जरूरतें भी मतदाता के सामने होंगी। भाजपा अपने विकास माडल और धामी सरकार के कामकाज को लेकर मैदान में उतरेगी। कांग्रेस को जवाब में केवल चेहरे की राजनीति नहीं, बल्कि एक स्पष्ट वैकल्पिक एजेंडा भी देना होगा। अगर कांग्रेस आर्य को सामने रखती है तो उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि चेहरा आकर्षण बने, बोझ नहीं।

भाजपा ने तैयार की चुनावी 'फौज'...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

बन सकती है। भाजपा की इस तैयारी ने कांग्रेस पर भी दबाव बढ़ा दिया है। कांग्रेस जहां अपने संगठन को नए सिरे से मजबूत करने और चुनावी चेहरे को लेकर मंथन कर रही है, वहीं भाजपा ने संगठनात्मक स्तर पर अपना ढांचा सामने रख दिया है।

भाजपा के लिए सबसे बड़ा फायदा उसका मजबूत बूथ नेटवर्क है। पार्टी इस नेटवर्क को और सक्रिय करके चुनावी मुकाबले में शुरुआती बढ़त लेने की कोशिश कर रही है। हालांकि कांग्रेस के पास सरकार के खिलाफ स्थानीय नाराजगी, बेरोजगारी, महंगाई, पलायन और क्षेत्रीय मुद्दों को उठाने का अवसर रहेगा। इसलिए भाजपा के सामने चुनौती केवल संगठन खड़ा करने की नहीं, बल्कि जनता के बीच अपने पक्ष में माहौल बनाए रखने की भी होगी। उत्तराखंड की राजनीति में अक्सर चुनावी मुकाबला मुख्यमंत्री चेहरे और सरकार के प्रदर्शन के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। लेकिन 2027 में भाजपा इसे संगठनात्मक ताकत की लड़ाई बनाने की कोशिश कर रही है। प्रदेश कार्यसमिति में दिग्गजों को जिम्मेदारी देकर पार्टी ने संकेत दिया है कि चुनावी मैदान में एक साथ कई मोर्चे खोले जाएंगे। कोई नेता बूथ संभालेगा, कोई विधानसभा क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को सक्रिय करेगा, कोई सरकार की उपलब्धियों को जनता तक ले जाएगा और कोई कमजोर सीटों पर पार्टी की संभावनाओं का आकलन करेगा। अर्थात भाजपा ने चुनाव से पहले ही अपनी फौज की तैनाती शुरू कर दी है।

संगठन की घोषणा करना आसान है, लेकिन उसे चुनावी मशीन में बदलना चुनौती है। कार्यसमिति के नेताओं के सामने सबसे बड़ी परीक्षा यही होगी कि वह कागज पर मिली जिम्मेदारी को जमीन पर कितनी मजबूती से निभा पाते हैं। भाजपा अगर बूथ स्तर तक अपने संगठन को सक्रिय करने में सफल रहती है तो कांग्रेस के लिए मुकाबला और कठिन हो सकता है। लेकिन अगर स्थानीय असंतोष, टिकट की खींचतान या नेताओं के बीच गुटबाजी संगठन पर भारी पड़ती है तो यही बड़ा ढांचा पार्टी के लिए चुनौती भी बन सकता है। फिलहाल भाजपा ने साफ कर दिया है कि 2027 का चुनाव उसके लिए अभी से शुरू हो चुका है। प्रदेश कार्यसमिति का गठन इसी चुनावी तैयारी की पहली बड़ी तस्वीर है। अब देखना होगा कि भाजपा की यह राजनीतिक फौज विधानसभा चुनाव तक कितनी सक्रिय रहती है और बूथ से लेकर सत्ता के गलियारों तक उसकी रणनीति कितनी कारगर साबित होती है।

सृजन, सम्मान और पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ मना 'साईं सृजन पटल' का द्वितीय स्थापना दिवस

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की संस्कृति, साहित्य और सृजनशील प्रतिभाओं को मंच देने वाले साईं सृजन पटल का द्वितीय स्थापना दिवस रविवार को जोगीवाला स्थित कार्यालय में धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। समारोह में सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखते हुए स्कूली बच्चों को स्टेशनरी किट वितरित किए गए। वहीं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को हतोत्साहित करने के लिए दुकानदारों, कार्मिकों और पटल के सदस्यों को जूट के बैग वितरित किए गए।

पटल के संस्थापक एवं सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो. के. एल. तलवाड़ ने बताया कि साईं सृजन पटल की स्थापना 9 अगस्त 2024 को हुई थी। दो वर्षों की यात्रा में पटल ने साहित्य, शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों से जुड़े कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। मासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन, मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति, लेखकश्री सम्मान, एनएसएस सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी पुरस्कार, प्रतिभाओं का सम्मान, समाचार लेखन तथा एआई के प्रयोग का प्रशिक्षण पटल की प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं। पत्रिका के 24 अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित हो चुके हैं।

पत्रिका के उपसंपादक अंकित तिवारी ने कहा कि साईं सृजन पटल केवल साहित्यिक मंच तक सीमित नहीं है, बल्कि उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत, लोक परंपराओं और रचनात्मक चेतना को संरक्षित कर उसे नई पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह में सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ. एस.डी. जोशी, प्रो. राजेश कुमार उभान, डॉ. अनूप वीरेंद्र कठैत, डॉ. चंद्रभूषण बिजल्वाण, वैष्णवी लोहनी, नीलम तलवाड़, अक्षत तलवाड़, नित्या लोहनी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

भूकंप के झटकों से दहशत का माहौल

हमारे संवाददाता

उत्तरकाशी। भूकंप के लगातार झटकों से देर रात दहशत का माहौल हो गयाों रात करीब 1:21 बजे आए झटकों से कई लोगों की नींद खुल गई और घबराए लोग घरों से बाहर निकल आए।

राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के मुताबिक भूकंप का केंद्र उत्तरकाशी से करीब 22 किलोमीटर पश्चिम-उत्तर-पश्चिम में जमीन से 10 किलोमीटर नीचे था। फिलहाल किसी जान-माल के नुकसान की सूचना नहीं है। बताया जा रहा है कि पहले झटके के करीब 24 मिनट बाद 1:45 बजे 2.2 तीव्रता का एक और भूकंप आया। इसके बाद 2:19 बजे टिहरी गढ़वाल में 2.0 तीव्रता का भूकंप भी रिकॉर्ड किया गया। लगातार आए झटकों के बाद लोगों में डर का माहौल बना रहा। उत्तरकाशी पहले से ही हिमालयी भूकंपीय क्षेत्र में होने के कारण संवेदनशील माना जाता है। बहरहाल लगातार आये इन भूकंप के झटको से उत्तराखण्ड मे दहशत का माहौल बना हुआ है।

मोदी सरकार की मजदूर-किसान विरोधी नीतियों के खिलाफ जेल भरो आंदोलन

संवाददाता

देहरादून। मोदी सरकार पर मजदूर किसान विरोधी नीतियों का आरोप लगाते हुए सीटू, ऐटक, इंटक व किसान सभा के कार्यकर्ताओं ने जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन कर गिरफ्तारी दी। जिसके बाद उनको रिहा कर दिया गया।

उत्तराखण्ड संयुक्त ट्रेड यूनियंस संघर्ष समिति व संयुक्त किसान मोर्चा के तत्वाधान में सीटू, ऐटक इंटक व उत्तराखंड किसान सभा से जुड़े कार्यकर्ता बड़ी संख्या में गांधीपार्क में एकत्रित हुए। इस अवसर पर सीटू के जिला महामंत्री लेखराज ने बताया कि जिला मुख्यालय कूच किया गया। वह राजपुर रोड, घंटाघर, गांधी रोड, तहसील चौक से होते हुए जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचा जहां कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में गिरफ्तारी दी। इस अवसर पर सिटी मजिस्ट्रेट ने जिला मुख्यालय पर ही गिरफ्तार आन्दोलनकारियों को बिना शर्त रिहा कर दिया। इस अवसर पर राष्ट्रपति को प्रेषित ज्ञापन भी सिटी मजिस्ट्रेट द्वारा लिया गया। गांधी पार्क में हुई सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि मोदी सरकार द्वारा चार श्रम साहिताएं लागू करने से मजदूरों का शोषण बढ़ गया है इन श्रम सहिताओं के तहत मजदूरों के अधिकारो में व्यापक कटौती की गई है जिससे उनके श्रम की लूट बढ़ गई है। इस अवसर पर उन्होंने मांग की है कि श्रम संहिताओं और नियमों को वापस लिया जाए। औपचारिक और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के सभी श्रमिकों के लिए यूनियन बनाने, पंजीकरण, मान्यता, 8 घंटे कार्यदिवस, कार्यस्थल सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, हड़ताल का अधिकार, सामूहिक सौदेबाजी और निश्चित अवधि की नौकरी की समाप्ति सुनिश्चित की जाए। सभी फसलों पर 2+50 प्रतिशत के आधार पर एमएसपी सुनिश्चित किया जाए तथा गारंटीकृत खरीद की जाए। बिजली संशोधन विधेयक 2025 को वापस लिया जाए। शांति अधिनियम (शांति एक्ट) वापस लिया जाए तथा बिजली के निजीकरण पर रोक लगाई जाए।

क्लीन एंड ग्रीन एनवायरनमेंट ने किया इस मानसून सत्र का पांचवा वृक्षारोपण

संवाददाता

देहरादून। क्लीन एंड ग्रीन एनवायरनमेंट समिति द्वारा इस मानसून सत्र का पांचवा वृक्षारोपण अभियान पौंधा क्षेत्र मे स्थित गुरुकुल आश्रम मे संपन्न किया गया। इस अवसर पर बांस के 75 से 80 वृक्षों का रोपण गुरुकुल आश्रम के अंदर की बॉउंड्री वाल के साथ साथ किया गया।

समिति के अध्यक्ष राम कपूर ने कहा कि इस वर्ष जुलाई मे हुई अत्यधिक वर्षा के कारण गुरुकुल आश्रम के एक हिस्से का पूरा पुश्ता टूट गया और आश्रम मे अत्यधिक नुकशान हुआ जिसकी वजह से बांस के पेड़ों को लगाने की आवश्यकता महसूस हुई। बांस के वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोकते है।

अतः गुरुकुल आश्रम के आचार्य ने समिति से सिर्फ बांस के वृक्षों को ही लगाने का अनुरोध किया। गुरुकुल प्रबंधन नें समिति द्वारा लगातार किया जा रहे वृक्षारोपण कार्यक्रमों की प्रशंसा की। गुरुकुल के बच्चों द्वारा भी स्थान की साफ सफाई की और पेड़ों को लगाने हेतु गड्ढे बनाये।

इस वृक्षारोपण अभियान में समिति के अध्यक्ष एवं संस्थापक राम कपूर, सचिव जेपी किमोठी, सह संयोजक, अमित चौधरी, संयोजक नितिन कुमार, अमरनाथ कुमार, राजेश बाली, गगन चावला, अनुराग शर्मा, सुभाष जसोरिया, नमित चौधरी, दिवाकर नैथानी, प्रशांत चौधरी, गौरव सोनकर, मंजुला रावत, हृदय कपूर इत्यादि सदस्य तथा गुरुकुल आश्रम के आचार्य श्री चंद्रभूषण , गुरुकुल प्रबंधन तथा आश्रम के समस्त बच्चे उपस्थित रहे।

टैक्स चोरी को रोकने के लिए एआई आधारित जांच बढाएः मुख्य सचिव

संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने कहा कि एसजीएसटी विभाग को टैक्स चोरी को रोकने के लिए एआई आधारित जाँच बढ़ाए जाने पर काम किए जाने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने सचिवालय में राजस्व वृद्धि के सम्बन्ध में अधिकारियों के साथ बैठक ली। बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने लक्ष्य के सापेक्ष अर्जित राजस्व की जानकारी ली एवं राजस्व वृद्धि के नवीन प्रयास एवं नवाचारों पर अधिकारियों से चर्चा की। मुख्य सचिव ने कहा कि एसजीएसटी में अभी काफी पोटेंशियल है। उन्होंने एसजीएसटी विभाग को टैक्स चोरी को रोकने के लिए एआई आधारित जाँच बढ़ाए जाने पर काम किए जाने के निर्देश दिए।

उन्होंने अगले 4-5 महीनों में एआई बेस्ड मैकेनिज्म तैयार किए जाने के निर्देश दिए। साथ ही, कर सम्बन्धी सभी विभागों का डाटा इंटीग्रेशन किए जाने पर जोर दिया।

उन्होंने परिवहन विभाग के एएनपीआर कैमरों के प्रभावी उपयोग के साथ ही सब रजिस्ट्रार कार्यालयों में निबंधन और रजिस्ट्रेशन सम्बन्धी रखरखाव कार्यों का डिजिटाईजेशन किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वन या गैर क्षेत्रों में नये खनन लाटस चिन्हित किये जाएं तथा इस हेतु जिला प्रशासन का सहयोग भी प्राप्त किया जाए।

उन्होंने परिवहन विभाग द्वारा स्थापित किये गये एएनपीआर कैमरा को खनन विभाग, वन विभाग तथा राज्य कर विभाग के साथ इंटिग्रेट किए जाने की बात कही। मुख्य सचिव ने कहा कि वन निगम जिन खनन व प्रकाष्ठ लॉट्स पर कार्य नहीं कर पा रहा है, उन पर वन विभाग अपने स्तर से कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जड़ी बूटी के क्षेत्र में भी अच्छा पोटेंशियल है। उन्होंने जड़ी बूटियों से सम्भावित आय का अध्ययन किए जाने की बात कही। कहा कि आय के नए स्रोत के रूप में कार्बन क्रेडिट, नये इको टूरिज्म स्थलों का विकास को सम्मिलित किया जाए।

उन्होंने जनसामान्य को प्रकाष्ठ की सुगम उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु ऑनलाईन व्यवस्था की सुनिश्चित किए जाने पर जोर दिया। साथ ही इसके लिए आईटीडीए से तकनीकी सहायता हेतु समन्वय किए जाने की बात कही। इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर.के. सुधांशु, आर. मीनाक्षी सुन्दरम, सचिव दिलीप जावलकर, बृजेश कुमार संत, रणवीर सिंह चौहान, अपर सचिव हिमांशु खुराना, श्रीमती अनुराधा पाल एवं मनमोहन मैनाली सहित सम्बन्धित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

दून अस्पताल की लिफ्ट में 12 साल के बच्चे से की अश्लील हरकत!

हमारे संवाददाता

देहरादून। राजकीय दून मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय, देहरादून में एक बार फिर गंभीर घटना सामने आई है। यहां मेडिसिन विभाग में भर्ती एक मरीज के साथ आए 12 वर्षीय बच्चे के साथ अस्पताल के सफाईकर्मी द्वारा लिफ्ट में अश्लील इशारे करने का आरोप लगा है। घटना के बाद सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने से अस्पताल प्रशासन में हड़कंप मच गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार घटना रविवार दोपहर करीब दो बजे घटी। बच्चा लिफ्ट में जा रहा था। लिफ्ट में पहले से मौजूद सफाईकर्मी ने उसके साथ अश्लील इशारे किए। लिफ्ट से बाहर निकलते ही बच्चे ने परिजनों और अस्पताल में मौजूद अन्य लोगों को पूरी घटना बताई। परिजनों ने तुरंत अस्पताल प्रबंधन से शिकायत की और आरोप लगाया कि सुरक्षा व्यवस्था पर्याप्त नहीं है। परिजनों के गुस्से और आरोपों के बीच एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से फैला। वीडियो में घटना से जुड़ी शिकायतें और आक्रोश साफ दिखाई दे रहा था। वहीं आरोपी सफाईकर्मी ने आरोपों को गलतफहमी बताया है। उसका कहना है कि वह बच्चे के साथ केवल मजाक कर रहा था और उसकी कोई गलत मंशा नहीं थी। प्रशासन ने दोनों पक्षों के बयान दर्ज करने शुरू कर दिए हैं।

बता दे कि यह घटना अस्पताल में पहली नहीं मानी जा रही। पहले भी सुरक्षा और कर्मचारी व्यवहार से जुड़ी शिकायतें सामने आ चुकी हैं, जिसकी वजह से प्रशासन पर सवाल उठ रहे हैं। दून मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य डॉ. गीता जैन ने कहा कि चिकित्सा अधीक्षक से पूरे प्रकरण की विस्तृत रिपोर्ट तलब की गई है। रिपोर्ट में सामने आने वाले तथ्यों के आधार पर ही आगे की कार्रवाई तय की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि अस्पताल प्रबंधन की जांच पूरी होने के बाद ही यह तय होगा कि वास्तव में क्या हुआ था।

श्रावण के अंतिम सोमवार को बाबा केदार के दर्शन के लिए उमड़ा सैलाब

हमारे संवाददाता

रुद्रप्रयाग। श्रावण माह के अंतिम सोमवार के पावन अवसर पर बाबा केदारनाथ के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखने को मिला। सुबह से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु बाबा केदारनाथ के दर्शन के लिए धाम पहुंचते रहे। बता दें कि अब तक 14,45,946 श्रद्धालु बाबा केदारनाथ के दर्शन कर चुके हैं। केदारनाथ धाम पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षित यात्रा को लेकर जिला प्रशासन की ओर से व्यापक व्यवस्थाएं की गई हैं। धाम में श्रद्धालुओं के रहने, भोजन, पेयजल, स्वास्थ्य, स्वच्छता और अन्य आवश्यक सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। प्रशासन की टीमें लगातार व्यवस्थाओं की निगरानी कर श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने में जुटी हैं। श्रावण माह के अंतिम सोमवार को धाम में बाबा केदार के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय नजर आया।

2036 ओलंपिक की भारत में मेजबानी की मनोकामनाः

मंत्री रेखा आर्या ने उठाई 'संकल्प कांवड़ यात्रा'

संवाददाता

हरिद्वार। भारत वर्ष 2036 में ओलंपिक खेलों की मेजबानी करे, इस ऐतिहासिक संकल्प और मनोकामना के साथ उत्तराखंड की खेल एवं युवा कल्याण मंत्री रेखा आर्या ने 'ओलंपिक 2036 संकल्प कांवड़ यात्रा' की शुरुआत की है।

आज यहां भारत वर्ष 2036 में ओलंपिक खेलों की मेजबानी करे, इस ऐतिहासिक संकल्प और मनोकामना के साथ उत्तराखंड की खेल एवं युवा कल्याण मंत्री रेखा आर्या ने 'ओलंपिक 2036 संकल्प कांवड़ यात्रा' की शुरुआत की है। यात्रा का शुभारंभ आज सुबह 7:00 बजे हरिद्वार स्थित विश्व प्रसिद्ध हर की पैड़ी से हुआ। हर की पैड़ी पर कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने विधिवत पूजा-अर्चना के बाद देश में ओलंपिक खेलों के सफल आयोजन का संकल्प लेते हुए गंगाजल उठाया। सैकड़ों खिलाड़ियों और महिलाओं ने की भागीदारी।

हरिद्वार से शुरू हुई यह कांवड़ यात्रा अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हुए रायवाला पहुंच चुकी है। यात्रा में खेल मंत्री के साथ सैकड़ों की संख्या में महिला खिलाड़ी, एथलीट और स्थानीय नागरिक उत्साहपूर्वक शामिल हो रहे हैं। यात्रा के दौरान श्हर-हर महादेवश और श्भारत माता की जयश के उद्घोष से पूरा मार्ग गुंजायमान हो रहा है। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर श्रद्धालुओं और खेल प्रेमियों द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत किया जा रहा है। इस संकल्प कांवड़ यात्रा का समापन आज शाम ऋषिकेश के प्रसिद्ध वीरभद्र मंदिर में होगा। जहाँ खेल मंत्री रेखा आर्या भगवान शिव का पवित्र गंगाजल से जलाभिषेक कर भारत की ओलंपिक मेजबानी की सफलता की कामना करेंगी।

झारखंड में छात्रों का विधानसभा घेराव, पुलिस ने किया वॉटर कैनन का इस्तेमाल!

संवाददाता

रांची। झारखंड में पेपर लीक के मुद्दे पर छात्रों का आंदोलन और तेज हो गया है। आज प्रदर्शनकारी छात्रों ने मार्च करते हुए विधानसभा की ओर कूच किया लेकिन पुलिस ने इन्हें रोकने के लिए कई जगहों पर कांटों वाली बैरिकेडिंग की है। पुलिस ने वाटर कैनन का इस्तेमाल करते हुए पानी की तेज बौछार भी की। इस दौरान एक छात्र पुलिस बैरिकेडिंग पर चढ़कर डांस करने लगे। जिसका वीडियो भी सामने आया है। इस दौरान भारी शोर होता रहा और प्रदर्शनकारी विधानसभा घेराव के लिए अड़े रहे। प्रदर्शनकारियों ने कई जगहों पर बैरिकेडिंग तोड़ दी।

बता दें कि झारखंड में आज छात्र पेपर लीक मामले के अपना विरोध जताते हुए विधानसभा मार्च निकाल रहे हैं। सरकार के साथ कई राउंड की बातचीत हुई है, लेकिन मांगें पूरी नहीं होने के कारण छात्र आज विधानसभा की ओर निकले हैं। पुलिस ने सुरक्षा सख्त कर दी है। धारा 163 लागू कर दी गई है। साथ ही सीएम आवास के बाहर धरने के लिए पहुंच बाबू लाल मरांडी समेत कई बीजेपी नेताओं को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

जेपीएससी-जेएसएससी रिफॉर्म्स मंच के नेता रवींद्र पासवान ने कहा, जब तक सीबीआई से जांच की हमारी मांग पूरी नहीं हो जाती, हम कोई समझौता नहीं करेंगे। प्रदर्शनकारी झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) और झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) में व्यापक सुधार की मांग कर रहे हैं।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि हम शांतिपूर्ण तरीके से ही आगे बढ़ रहे हैं। पुलिस पानी की बौछार कर रही है, लेकिन हम इसका भी आनंद ले रहे हैं। यहां सबकुछ शांतिपूर्ण तरीके से हो रहा है, किसी तरह की अभद्र भाषा का इस्तेमाल नहीं हो रहा है, अभद्र नारेबाजी नहीं हो रही है, हिंदू-मुस्लिम नहीं हो रहा है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।